|| श्रीगणेशायनमः ||

पुत्र अमोलक चंद की, रचना बडी विचित्र ।
है उनहीं में एक यह, झालावाड़ चरित्र ॥

तवारीख एक राज झालावाड़

रचयिता

सेठ इन्द्रमल अमोलकचंद ओसवाल जिंदाणी
जागीरदार मौज़े मजनपुर

जिसको

पट्टना धीश झालाकुल कमल दिवाकर माहाराज धिराज
माहाराज राणा सर भवानीसिंहजी साहब बहादुर
के. सी. एस. आई. की

आज्ञानुसार

झालावाड़ सेंट्रल जैल प्रेस में
मुद्रित कराया
सन् १९१२ ईसवी

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

पुत्र अमोलक चंद की, रचना बडी बिचित्र ।
है उनहीं में एक यह, झालावाड़ चरित्र ॥

तवारीख एक राज झालावाड़

रचयिता

सेठ इन्द्रमल अमोलकचंद ओसवाल जिंदाणी
जागीरदार मौज़े मजनपुर

जिसको

पट्टना धीश झालाकुल कमल दिवाकर माहाराज धिराज
माहाराज राणा सर भवानीसिंहजी साहब बहादुर
के. सी. एस. आई. की

आज्ञानुसार

झालावाड़ सेंट्रल जैल प्रेस मे

मुद्रित कराया

सन् १९१२ ईसवी

श्रीगणेशायनमः ॥

तवारीख एक राज झालावाड़

—:o:—

झालरापाटन माहाराज राणा जी की उतारी जिंदाणी इन्दरमल वल्द अमोलकचंद जागीरदार

अव्वल रजपूत केसरीसिंहजी मकवाणा सम्बत १३३१ की सालमें पूरब पटणा सूं गुजरात गया। सिद्धपुर पाटण में चाकरी सिद्धरावजी सोलंखी की करी, जो मंडलीक छा । रोजीना एक दिन का १५ रुपया) तनखा हुई । नित्यनेम पहर सवाताई करता एकान्त । पाछे एक देवी को रूप धार पोखता ठाकर के घरमें बैठी जिसूं बेटा चार हुवा सो चारूं बेटा खेल रह्याथा सो एक बेटा सूं प्रसन्न हुई पाछे देवी तो अपणे ठिकाणे गई जब केसरी सिंह जी सूं कह गई अब तुम्हारा हमारा घर बासा नहीं अब तुम्हारे पिछाडी की ओलाद हमकों "बिश्वंतमाता"

अपनी कुल देवी कर पूजणा । फेर कितनाक दिन बाद केसरीसिंहजी मसाणा में रोटी गुजरात परगणे रस्ता चलता करण लाग्या, जब मसाणा में एक भूंत खड़ो होकर साम्हने आण उभो रह्यो। रोटी मांगी जब केसरी सिंहजी के भूत के बोला चाली हुई आपसमें लडाई होई, भूत केसरी सिंहजी सूं हार्‍यो । जब भूत लाचार हुवा, परभात की पिछली रात भूतको जोर हट गयो जब भूत को बस करलीनो। जब भूत ने केसरीसिंहजी कों बचन दीन्हों जीं बखत थाँके काम पडे जीं बखत याद करोगा जब आप की चाकरी में हाजिर हुवांगा । जब भूत सों बचन लेकर बाट्यां दीन्हीं पीछे छोड्या । फेर गुजरात में जूनागढ़ का नव्वाब को राज थो सो नव्वाब की चाकरी में पहोंच्या जब नव्वाब ने कही मांग जब केसरी सिंहजी ने कही कि एक रात में जतरा गावां के तोरण बांधू ऊतरा गांव मीलणा चाहीये । जब नव्वाब ने जुबान दीन्हीं। नव्वाब ने अपने दिलमें बिचार कर्‍यो कि घोड़ा पर चढ़कर फिरेगो तो घणी दोड़ करे गोतो १० तथा १५ गांव में तोरण बांधें गो जब बचन दीन्हों । जब केसरी सिंहजी ने भूत कों याद कर्‍यो । भूत पर सवार होकर गावां में तोरण बांध्या तो गांव ३६० में तोरण बांध्या ।

परभात हुई कूकड़ो बोल्यो, जब भूत बोल्यो अब म्हारो जोर हटगयो। जब दिन उगगयो जब नव्वाब के पास जाकर केसरीसिंहजी ने सलाम करी। जब नव्वाब ने फरमाई थाने कितना गावां में तोरण बांध्या। जब केसरी सिंहजी ने अरज करी आपके पास खवर आई जावेगी। गांव २ की खबर आणे लगी। गावाँ का नांव लिखणे लाग्या तो गांव ३६० की नांव पनाई मँडी। जब नव्वाब की अकल ठिकाणे आई। पण जुबान नव्वाब ने दीनी थी सो देणा पड़्या। पाछे राजा होया झालावाड बागी। फेर कई पुश्तां बरसां बाद माधो सिंहजी बरस ४ चार का बालक था सो चौक में माताजी के मकान के आगे खेलता छा हाती मस्त छूट्यो चल्यो आतो छो। मावत लार नहीं छो। जब यांके पास आगयो जब माताजी झांकी मेंसे देख रह्या छा पाछे हाथी को वार सूंडसूं पकड बाको पड्यो जब माता जी ने हाथ झाकी में से बधा कर बारने आकर उठा अपणी गोदमें बिठा लिया। जबसे झाला बाज्या जबसे गूजरात में झालावाड़ बाजी माधो सिंहजी मूछारा हूवा ज्याने बादशाह के हाथी का माथामें फोलादी ढाल लग रही छी तीमें तीर की मारी, तो ढाल, हाथी फोड पेली पार

निकल गयो इशा महाबल़ का धणी था । ठाकरां झाला मकडीया भावसिंहजी के अव्वल गुजरात में बेचरमाता थी सो फेर हाथं को झालो दीन्हों जबसे कुलदेवी बिश्वंत माता हुई ।

ठाकुरां झाला भावसिंहजी कँवर माधोसिंहजी गुजरात सूं सम्बत १७३८ में आया सो सावर का सगतावतां के बास रह्या गाँव मोड़ी बसाई ठाकुरां भाव सिंहजी तो देवलोक हुवा मोड़ी में ज्यांकी लार ठुकराणी एक सती हुई। पीछे छत्री बणाई सो हाल तक उठे पूजा बिरामण करेछे, रुजगार इठे सूं पावेछे । पाछे चारणाने केणावत जोड़ी ।

मोड़ी माधोसिंह की बसेन उजड होय ।
ग्यारा बारा टापरा बीस न पूरा होय ॥

पाछे राज माधोसिंहजी के कँवर सात होया तीमें कँवर तीन तो पीछा गुजरात गिया और कँवर दो बाल पणे में गैर हाजर होया । और कँवर एक की ओलाद हिम्मत सिंहजी गोपालसिंहजो । कवँर बडा मदनसिंहजी की ओलाद चालि वे जाखमूंड का हाडांके परण्या । यां के कँवर पिरथीसिंहजी जनम्या सो धांगडमऊ सक्तावतां

के परण्या सो पिरथीसिंहजी कँवर पदेमें गैरहाजर हुवा कोटे में, ज्यांकीलार सती चार हुई जीमें दोतो नानता का बाग में, दो कोटे साजी दहेड़े। जालमसिंहजी गरभ में छा सो पाछे जनम्या सो बरस सात ताईं तो नानेरे धागड़मऊ बडा होया सम्बत १७९७ की साल में जनम्या। पाछे मदनसिंहजी बूंदी रावराजा बिसनसिंहजी की बगतमें आया। उठे जागीरी गावँ हजार २०००० बीस को पट्टो कढायो। पाछे केताक बरस के बाद एक रोज रावराजाजी की सवारी मुलकगीरी में पधारी जिठे यांकी जागीरीका गांव के गोरवें पधारी तो साख बहोत आछी नेपैदेखी जब रावराजा जी हुकम फरमायो की असी भरी साखहैं भी छोडर जावेजब यां ठाकरांने अरज कर मुजरो कऱ्यो, फेर रावराजा जी बहुतेरी खातरी फरमाई पण उठे रह्या नहीं कोटे आया सो कोटा में माहारावजी श्रीदुरजन सालजी राज करता छा सो वाने ढाब्या। पट्टो गांव दस १० को तीमें गांव पांच सूंतो नानतो दीनो, गांव पांच हाडोतीमें चामलके किनारे काढ दीन्हां रेख हजार ४००००) चालीस कीसूं। पाछे नानता में मनख ठुकराणियां रहबो करी। पाछे सम्बत १८१८ का साल में जैपुर वालांके और कोटा वालां के भटवाडेमें लडाई

होई तीमें जालमसिंहजी लार छा सो जैपुर वालां को नंगारो और पचरंग निशाण खोस लीनो सो रावण पर चढायो सो आज दिनतक दसरावापै रावण पर लागेछे। पाछे सम्बत १८२२ का सालमें राज जालिमसिंहजी के बोहोरा, बरेठ्या, महाजन बगेरवाल बरमूंडा जातकोछो तींके बोली बाणीहोई देणलेण पै सो बाणियांहैं कोटरीमें मूंज मिरच्यां की धूणींदीनी जबरीकरी। जब माहारावजी श्रीगुमानसिंहजी सूं अरज हुई जब माहारावजी राज जालिमसिंहजी सूं खफा होया जब राज जालिमसिंहजी ने मनख कबीलातो नानते रहबा दीना आपके दिल में तर्क लाकर सादड़ीका काका राजसिंहजी के पास पहूंच्या सम्बत १८२४ में। जब राजसिंहजी ने पूछी भतीजजी कस्यां आणो बण्यो। जब राज जालमसिंहजी ने कही, माहारावजी के और मारे बोली बाणी की तरक हो गई। तींसूं हूं चल्यो आयो। तींपै राजसिंहजी ने कही अठे रहो योबी ठिकाणो घर थांकोई छे। जब जालमसिंहजी ने कही इठेतो हूं नहीं रहूं राणाजीके गोढे आप अरजकर मीलादो जब सादड़ीका झाला उदैपुर की रियासतको कुल कारबारो. राणाजी श्रीअड़सी जी के मूंडाआगे करताछा सो अरज कर राणाजी के पास आठ पहर की चाकरी ढोलणी का

झरा का जाबता पर राखदीना । खाणेकुं करदीनो । पाछे सिंधिया माहाराज की खीरणी उदयपुर चढरही तीं-की ताकीद पै पेशवा फोज लेकर आया सो खीरणी का-रुपया को तकाजो करयो । सादड़ी वालांने काई बंदो-बस्त कर्‌यो नहीं तींकी राणाजी के बडी अताप लागरही थी । जब राणाजी उदास बैठया जब जालमसिंहजी ढोलणी के गोढे पहरापै बैठया था सो उदास राणाजी कों देखकर अरज करी माहाराज आप हैं इतरो बिचार आज काई छै । आपतो हिंदवा सूरज हो सो इरादो करो सो होसके छै । आदमी पै हाथ धर्‌यां सब कुछ हो-सकेछै जब राणाजी ने फरमाई झाला ठाकुरां थांसूं बं-दोबस्त होजासी । जब जालमसिंहजी के वास्ते राणाजीने महलां के छाजे पर बिराजने हुकम दीन्हो। हमारो हुकम जालमसिंहजी पर छै जालमसीहजी को हुकम सारी रियासत पर छै । सो कई महीनां तक उदयपुर की रियासत में कारबारो कीन्हो । फेर सम्बत १८ में जाल-मसिंहजी को बियाव राणाजी का भाई की बेटी सूं कर्‌यो कन्यादान राणाजी दीन्हों उदयपुर की पाल तोरण मार्‌या गांव "किरपापुर" जागीर में दीन्हों सो हाल तक बणरह्यो छै । पाछे पेशवा महाजी

सैंधिया की फोज के राणाजी के लडाई होई तीमें उदयपुर की तरफ सूं शाहपुरा का राजा उम्मेदसिंहजी तथा जालमसिंहजी मुखत्यार छा। पाछे नदी सफरा में उम्मेदसिंहजी ने जालमसिंहजी सूं कई थां अठेसूं जावो थां परतापीक होवोगा म्हांके पिछाड़ी का पर अहसान करबा जस्या होवोगा सो थां तो मरो मती म्हांतो अठे मरांगा। जब जालमसिंहजी तो सफरा नदी सूं नीकल्या शाहपुरा वाला उम्मेदसिंहजी काम आया तीकी मूंडकटी में खेराड़ परगणे का गांव कचोळा वगैरा राणाजी ने दीना सो हाल तक वण रह्या छे। पाछे जालमसिंहजी सफरा नदी सूं निकलतां महाजी सिंधिया की फोज का असवरां ने पकड लीना सो महाजी सिंधिया सूं मालुम करी जब गंगधार का किलामें सम्बत १८२६ में कैद हुवा। पाछे अंबाजी इगलिया छपडे गूगेर में राज करता था, जींसूं भाइला पणो थो। अंबाजी की बहु महाजी सिंधिया के राखी बांधती थी। जब राखी को दिन आयो और सिंधिया महाजी के राखी बांधी, जब सिंधिया महाजी ने कही "बेण मांग सो द्यां" जब ऊने कही जालमसिंहजी झाला गंगधार का किला में कैद है, सो छोडणा चाहिजे। जी पै महाजी सिंधिये फरमाई

यह आदमी बहोत जालसाज फरेबी है सो छोडणे लाइक नहीं। और तू मांगे तो मुल्क दूं जब ऊने अरज करी म्हूंतो योही मांगूं छूं नहीं तो बचन हारो जब महाजी सिंधिया ने छोडणे को हुक्म दीनो सो सम्बत १८२६ में छुट्या। पाछै महाराव गुमानसिंहजी कोटे वाला के सरीर में बीमारी हुई जब वाने बिचारी कि म्हारी तो उमर आई। म्हारे बेटा तीन है सो पीछे से बिखेडो पडेगो तीसों बिना डाटक, करता आदमी बिना रियासत को बंदोवस्त नहीं होवेगो। कोई ने कही जालमसिंहजी झाला हजूर के घर में चाकर उमराव है, करता आदमी है उनकूं बुला कर उनकी सुपरत रियासत करै। जब महारवजी ने कागद मांड सांडनी सवार सम्बत १८२७ में भेज कर बुलाया जीं बखत कोटा में काम कारबारो राय अखेरामजी, धाभाई जसकरण काका भतीजा करताछा। पाछे जालमसिंहजी ना गढ में हवेली बता दनी, जीमें रह्या। पाछे सिंधिया माहाराज की खिरणी का रुपैया चढरह्या था जींपे तारा बाई साहब फोज लेकर मुल्क में खिरणी उघबा पै सिंधिया माहाराजनें भेजी थी सो हाड़ोती में मुकाम बाईका हुवा सम्बत १८३० में थाणा महल चार ४ बारां, तथा मांगरोल, तथा रामगढ

रैलावण, में रोप दीना। फोज का लोग मुल्क में साखबाड़ी को उजाड़ कर लूटो खोसो करे तीसूं मुल्क उजड़ होवे या खबर महारावजी के लागी जब महारावजी कारबा-र्स्यां सूं कही ईंको बंदोबस्त करो मुल्क तबाहोवे छै तींपे कारबार्स्यां ने अर्ज करी जालमसिंहजी ना आप हुक्म फरमावो याने भेजो म्हांकी पहुंच नहीं । जब जालम सिंहजी सूं महारावजी फरमाई थां जावो बाई का कूंच अपणे मुल्क में से करादो। जब जालमसिंहजी ने हामल भरी दस हजार १००००) रुपया की महोरां नगदी खर्च सारूदी लवजमों लार दीनो जब जालमसिंहजी गया। तारा बाई की दास्यां हैं मोहोरां देकर बाई सूं मालुम कराई, जब बाईने डेरामें भीतर बुलाया। जालमसिंहजी ने नजर करी बाई ने जालमसिंहजी हैं देख्या चो नजर हुई बात चीत कर बहुत खुश हुई एकान्त करी एकान्त में बात चीत होई। बाई जालमसिंहजी की बोल चाल सुनकर बोत महरबान हुई सो दोनू दफे सलाम के वास्ते बुलावे एकंत करे। कुछ दिनामें कूंच बाई का करादीना फोज पर मुल्क में पटक दी चारूं ४ महलांका थाणा उठा दीना। जामलसिंहजी हैं बाई ने लार लेलीना। उस जमाने में सम्बत १८३२ की साल में मनोहरथानो

भीलां सूं लीनो आगे खाताखेड़ी भीलांके थी। पाछे याखबर महारावजी के पास पहूंची जालमसिंहजी को कागद पहूंच्यो जब महारावजी ने जाणी सो बाई जालमसिंहजी कों लार लेगई रोज दोनूं दफे एकान्त करे सो अब जालमसिंहजी को अबो कस्यां होवे। तब महारावजी ने जालमसिंहजी के नांव कागद लिखायो, तीमें लिखाई म्हाग सरीर में अरचन ज्यादा छे तीसूं थां बाई सूं सीख माग कर कागद बांचतां आवज्यो। योही जवाब बाईके नावे खरीतो मंडायो तीमें लिखायो। जब जालमसिंहजी हैं बाई सीख हरगच नही देती लेकिन लाचारी सूं बाई कूं राजीकर जालमसिंहजी ने अरज करी की फेर आप याद करोगा जद हाजर होऊंगो। जब बाईने जालमसिंहजी ने सखिदी। सरोपाव हजार पच्चासिको,सरपेच मोतीयां की कंठी घोडो दीनो। पाछा कोटे आया जब माहाराव गुमानसिंहजीने फोजदारा को खिलत दीनो। लिखा पढी करदीनी सो राज का मालिक तो म्हाका जाया जाम और ठाठका मालिक थांका जाया जामता। जब जालमसिंहजी ने महारावजी की नजर करी जींस दिन वही ध्रत छो सो किसीने कही राज आज तो वहीध्रतछे बज जालमसिंहजी ने कही

म्हारे तो आज सही भ्रत छे वहीभ्रत दुशमणा के घरने जीं दिन सूंई सरका में शुभकाम का महुर्त में वहीभ्रत लेण कर-योछे सो लेते हैं । पाछे महारावजीने महल का छाजापर खडाहोकर हुक्म सब रीयासत पर फरमायो म्हारो हुक्म तो जालमसिंहजी पर छै और जालमसिंहजी को हुक्म तमाम रीयासत पर छै । पाछे सम्बत १८२८ की सालमें माहाराव श्रीगुमानसीहजी तो श्रीजी का चरण पाया । पाछे बडा बेटा उम्मेदसिंहजी छोटा दो गोरधनसिंहजी गोपालसिंहजी सो ये दोनों बडा सकड छा सो गादी बैठणे के वास्ते बडा बेटा उम्मेदसिंहजी कों मारने कों तैयार हुवा सो उम्मेदसिंहजी भागने रावले में वांकी माँके गोढे जाय बैठ्या । पाछे जालमसिंहजी जनानी ड्योढी पर जार कवाई सो आप बारे पधारो जब वांकी माने कुवाई सो मारा बेटा ने मारनाखे सो म्हारे तो राज गद्दी चाहजे नहीं भलाई वे छोटा कँवर बैठ जावे । जब जालमसींहजी महाराव जी का रावला में धस माजी के गोढे से हात पकड़ उम्मेदसिंहजी हैं ले आया । जब उम्मेदसिंहजी की माने कही कि आप रावला में मारे रूबरू आया तो मारे पिता की जागछो जब सूं महारावजी जालमसिंह

जी सूं नानाजी को सनातन राख्यो पाछे उम्मेदसिंहजी हैं तो गादी बिठाया और दोनो छोटा बेटां कों कैद करदीना सो कैद में मर गया । पाछे जालमसिंहजी ने महाराव उम्मेदसिंहजी सों अर्ज करी कि म्हासूं बणी सो चाकरी पहोंचाई अब म्हाके पिछाडी कां के वास्ते सनद मांड देणी चाहिजे जब महारावजी ने खास दस्तखतां सूं जस्यां जालमसिंहजी ने मडाया जस्यां हीं दस्तावेज मांड दीनी। जब कोटा में आगे का कारबारी भाई बेटा उमराव बहुत सकड़ छा अपणे २ मूंडे कोडी खाजावेछा लेजावेछा जीं को बंदोबस्त जालमसिंहजी ने कर्यो जैसे माफक जसी तजारकदी। रियासत को बंदोबस्त अपनी अक्ल से करयो। देशी लोगाने तो तबाह कर्‌या पर देशी मुल्क २ का सब क़ोम ठिकाणा धारीयां हैं चाकर राख्या अपने जरिये से। जब कोटे की रियासत में रुपया १८०००००) अठारा लाख की तहसील लाटेकूटे से होवे थी । जी में खालसो तो लाख ६ को जागीरदार लाख १२ का छा पाछे जागीरदारां की जागारी इल्लत लगार खालसे करी ॥ और जमीन पडत थी सो किरसाणा कों राज का हल बैल मेल कर जुपाकर सुपरत करी सम्बत १८६४ में खाताबंदी कर कड़तो लगायो । एक साल अपनी नामवरी

करणे के वास्ते ९९ लाख रुपयां को आंक बठाण्यो बाकी ४००४०००) लाख को तो बटवाडो तीसरी पांती को सम्बत ९४ में होयो जो सदीव बैठेछा। जब कोटा में गुसांईं गेवरगिरजी गणपतगिरजी बागो बहोरो वगैरे लाखां रुपया का आसामी था जिनकों जालमसिंहजी ने सलाह दे गुसायां को धनतो चामल नदी के कराड़े पर समाधियां दो बणाई तीसूं कोटा को तो बंदोबस्त हुवो और गुसायां को नाम रह्यो बहोरां का धन की लाड पुरा की बुरजां बणवाई। शहाबाद आगे महाराव भीमसिंहजी लीनों सो पाडूण (नरवर) का राजा कूं कोटा की बाई परणाई तींका हतलेवा में दीनी वाने पुरोहितां कूं दीनी। शहाबाद संम्बत १५३५ में तीन किला तोड "धंधेरो" मुकट मुलतान ने बसायो। सम्बत १८३५ में जालम सिंहजी ने थाणे की गढी लीनी और फेर सम्बत १८३६ में शहाबाद गूजर पठान बडोरा का ने निसरणी लगा कर कूद पड़्या और बिरामणा सूं ले लीनो। बिरामणा गोठ करी छी सो जीमणे कूं गये थे पाछे सों कूद पड्या उनके आदम्यां हैं काढ दीना। पाछे भाई पूरणमलजी का बैटा बिरजलालजी की सुपरद शहाबाद करी। महाराव उम्मेदसिंहजी ने जालमसिंहजी सूं फरमाई

मामाजी शहाबाद आपने लीनी सो म्हाने माधोसिंहजी कुं बगसीछै । पाछे ब्रजलालजी के शहाबाद की पर धाननगी रही । पाछे हंस राजजी धनरूपजी कोठारी कन्हैयालालजी के पर दादाने परगणो आबाद कर्‍यो, पाछे कही परधान तालकादार गया । फेर सम्बत ३५ में ११ अग्यारा महल मुकाते जालमसिंहजी ने लीना तीमें महल ४ तो हुलकर सों ओर ७ सात महल सिंधिया महाराज का जींपर ठाकुर बीसनसिंहजी धांगड़मऊ वाला तथा अजीठन महराबखांजी के सुपरत करया । वाने बंदोबस्त कर लोगो ने सरकर तहसील करी सो महल ११ सम्बत १८७२ की साल ताईं मुकाते रह्या । सम्बत १८३४ की साल में गुजरात सूं झोल्यां लेबा वास्ते कँवरजी

कूं जालमसिंहजी ने बुलाया सो शेरगढ़ का किला में राख्या पाछे राणावतजी के माधोसिंहजी सम्बत १८३६ में जनम्या जब पाछी सीख दीनी सो पाछा गुजरात बड़वाणा गया जागीरी कढी नहीं तींसों गुजरात वाला सूं रहा रही नहीं जब कोटा सूं मदनसिंहजी झालावाड आया जद बुहार पाछो जारी कियो । जालमसिंहजी का खवासीणा भाई पूरणमलजी जालमसिंहजी के मूडे आगे काम रियासय को देताछा । पाछे वांके दिल में

गरूर आयो जब जालमसिंहजी के काना आवाज पहुंची जब हुक्म फरमायो कि पूरणमल के दिल में घमंड आयो सो म्हारे बिना महारावजी की रियासत को काम नहीं चालसी तींपे भोपो मिरधो जातको बलाई छो जींपे जालमसिंहजी ने हाथ धरयो ऊंकी जुबानी सूं रियासत को काम कई बरस लीनो। कोटा में धाबाई जसकरन काको भतीज सकड छा ज्याहैं आप में भिड़ा भतीजा का हाथ सूं काका को माथों तुडायो पाछे भतीजा हैं गोत हत्त्या लागी जींपे जालमसिंहजी ने महाराव उम्मेदसिंहजी सूं अरज कर हुक्म पहुचायो कि थां गंगाजी न्हाबा जावो गढ में आवो मती । यह पैच जालमसिंहजी ने चलाय कर अगाडी का कार गुजाराच्यां ने खारज करया केताक हैं निकाल दीना अपणे हाथरी कलम का राख्या । चाकर परदेशां से काम लीना । पाछे सम्बत ३५ का साल में आठों कोटड़्या हाडां की इन्द्रगढ, कारवाड, पीपलदो गैंतो, खातोली, बलवण, आंतरदो वगैरे यह आगे टांको किल्ले रणतभँवर पर भरता छा पाछे जालमसिंहजी कों कारगुजार जाण यां के पाहीचे कोटा की मारफत खरणी जैयपुर पहुंचाई । कोटा में आठूं कोटडियां का बुलाया जावे जब जैसे माफक जैसे कूरब कायदो पैठ्या, नगदी

को शिरस्तो बांध दीनो। जालमसिंहजी थां सूं सगपण बुहार को सनातन कर्‌यो। पाछे सम्बत १८३८ सुकेत में राज ढोढ रजपूतां को छो। जालमसिंहजी ने तोपां लगा कर गढी तोड नाखी ढोढांने काढ दीन्हा। बिश्वन्ती माता बिराजमान करी। पाछे सम्बत १८४५ की साल में जालमसिंहजी की बेटी गोगां बाई बूंदी का रावराजाजी श्रीजी का पोता बिशनसिंहजी हैं परणाया। पाछे श्रीजी तो चारधाम तीरथ करबा पधारया पाछे सूं जालमसिंहजी ने अपणो जावतो बूंदी भेजकर सारो कब्जो कर लीन्हो। पाछे श्रीजी साब पाछा पधारया जब बिसनसिंहजी ने अरज करादी की आप का डेरा केदार नाथ पे करो बूंदी में आणे से कुछ काम नहीं। जब श्री जी जाणी के जालमसिंहजी कोटो तो कब्जा में करयो बूंदी भी बेटी परणा ने कबजो कर लीनो। पाछे ठाकुरजी रघुनाथजी महाराज का दरसणा को बहानो कर बूंदी में आण बैठ्या। जीं बखत जालमसिंहजी ने अपणो बंदोबस्त जाबतो उठा लीन्हो। पाछे गोगां बाई कूं तकलीफ़ बूंदी वालां ने घणी दीन्ही। जालमसिंहजी राण्यां पांच ५ परनी, खवास्यां पासवान्यां ३२ बत्तीस छी। बेटा असल तो माधोसिंहजी और खुवासका गोधनदासजी

छा । आप सवारी कर मुल्क परगणे का गांव गांव नजर में निकाल्यां। कुवा निवाण बणाया। मुल्क आवाद कीन्हो आगे बस्ती पाटण चंद्रभागा नदी पर थी सम्बत ११०० की सालमें, जिस बखत जँवरिया खाल पर जोहरीलोगूं का बजार था सो कइ बरसों बाद बस्ती उजड़ होगई। उसके बाद दसा ओडणी कों पारस पाया जिससे सातसहेली का मंदिर पद्मनाथजी का बणाया तथा तलाव पाटण को खुदायो फिर उसी पारस कों तलाव में डाल दियो। फिर सम्बत १८४९ की साल में पाटण बसाई जैपुर की सी तरह पर शहर बसायो आसपास हुलकर सिंधिया का परगणा का लोगां हैं लूटा खोसी को भय जादा छो मुल्क में बादशाही की उतरा चढी थी, जालमसिंहजी को बुहार और दहशत सब जाग छी। जब सब लोग पाटण में आकर बसिया जब डोरी पटक बाजार साहूकारां सूं बणवायो। उस बगत पाटण में लुहार गंगाराम रतना की जगा में मूरता नग २ निकली नींम खुदी ती में। मूरत १ एक तो श्रीद्वारकानाथजी की सो सम्बत १८६२ में मंदिर पाटण का तलाव की पाल पर चोबुरज्यो बणा कर बिराजमान कीन्हां। और मूरत १ एक श्रीरमणीक नाथजी की सो छावणी में सम्बत १८६७ की साल में

मंदिर बणा कर गढ में बिराजमान कीन्हां । मूरता २ जूना संभू की जगा की नीम खुदी जी में निकली । जी में मूरत १ एक तो श्रीगोपीनाथजी की घी का बजार मैं मंदिर बणा कर पधराई और मूरत १ एक श्रीरणछोड नाथजी की पधराई ।

जिस बगत लोग आकर पाटण में बसिया । सब लोगांकी खातरी रक्खी और लोगांकूं पट्टा पर वाना खातरी का करदीना । जब लोग जगां जगां सूं आकर हजारों रुपया लगा अपणी अपणी दुकाना और मकान बणाया और रहणे लाग्या । बणज बुहार अपणे अपणे पैसेका किया । जब सेठ महाराम बिरधीचंद तथा दलजी मनीराम के सुपरत पाटण की बस्ती की सँभाल करी, काईदो बांध्यो । फेर सम्बत १८८८ की साल में पाटण में धाड़ो पड्यो थो खाड्या कोट की खिडकी में सूं धाड़े वाला घुस गया । सम्बत १८८५ की साल में मनीराम जी सू माधोसिंहजी ने नानता में रुपया ५०११०००) डंड के तौर पर लीना छा पाछे सम्बत १८९४ में रियासत को बटवाड़ो हुवो जब याहैं भी करजा में उतरा दीना सो कोटा की रियासत की तरफ लाग्यो सो सेठ मनीरामजी ने पटाया कोटे वालां सूं । सम्बत १८९१ का साल में छावणी जालमसिंहजी

ने बसाई जिस जगा सिरकार का डेरा की मेखा ठुकीथी उस जगा तो सिरकारी ख़ास बणी और जो सिरकार के साथ उस बखत में सरकार अपणा समझ कर रखता था जिन लोगूं का डेरा लगा हुवा था जिस जगा पै उन लोगों की ख़ास्यां मकान बणाया अपणा २ रुपया लगा कर सो हमारे भी बडा संतोखचंदजी कों भी जालमसिंहजी महाराज अपणी पूरी खातरी का तथा अकलमंद समझ कर हर बखत जठे जाता जठे अपणे साथ ले जाता पास राखता तो इस वजे से हमारे बड़ा भी इठे डेरा की खास पर दुकाना तथा मकान नोहोरो बणायो छो सो सम्बत १८९४ की साल तक सरकार साथ आते जाते जब रहते। फेर सम्बत १८९४ में राज बटा कर लाया जब रहण लाग्या, सो सम्बत १९१० की साल में गढ बणायो जिण में हमारा और दूसरों का भी मकान आगिया। फेर सम्बत १८७१ की साल में कोतवाली को बजार बसायो। संवत १८६२ कीसालमें सेठ साहूकार महरवानीं वालां कूं कुवा धरती छावणी के आसपास गोपालपुरा, वृन्दावन की बगसी, और जीं का पट्टा परवाना भी सब कूं बगस्या। और आगे जालमसिंहजी कोटा का गढ के भीतर हवेली में काम करता छा, पाछे

सम्बत १८५२ की साल में पायगां में बिराज्या काम उठे करबा लाग्या । सम्बत १८६० की साल में हुलकर मल्हारराव के अजेता का घांट पर मेदपुर के मुकाम पर करनेल लूणी अकत्तर साब अँगरेजी फोज के लड़ाई हुई, अँगरेजी फोज का पग पाछा लागीया । जब जालमसिंहजी के पास साहब आयो आषस में बात बतलावण होई । साहब ने फरमाई थां दरे के दरवाजो कों वंदकर चामल के पैली पार कुसक के घांटे उतारदो दो रोज हुल्कर की फोज कों रोक दो । जब जालमसिंहजी ने साहब सों अरज करी कि सरकार कम्पनी की चाकरी में म्हां बराबर पहुंचांगा लेकिन हमारे वास्ते परवरिश कैसी होवेगी । जब साहब ने खलीतो मांड दीनो, चार महल हुल्कर का तुम्हारे मुकाते है सो सरकार कम्पनी ने तुमको दिया । सिरकार कम्पनी तुम्हारी चाकरी बहुत बडी समझेगी । ऐसी दस्तावेज माँड कर जो कि महारावजी का उमराव भाई जबरदस्त छा जालमसिंहजी को हुकम कमा बेसी समझे छा सो उनकों महारावजी की रूबरू हुकम फरमा कर फोज देकर दरे के दरवाजे तोबा सुधां भेज कर हुल्कर को साम्हनो लीन्हो । अँगरेज लोगां हैं फोज सुदां चांमल उतार नावां नंदी में डुबो दीन्ही । पाछे

द्वरे के दरवाजे महारावजी की फोज भाई बेटा उमरावां का मांथा तुड़ाया। पाछै हुल्कर आगरे जाके फोज के पाछे लाग्यो सो भरतपुर आगरे ताईं पीछो कर्‍यो और अँगरेजा सूं लड्या, फेर फरुखाबाद में अँगरेजा ने हुल्कर पर धावो दीन्हों, हुल्कर की फोज मारी गई, हुल्कर इक्के घोडे लाहोर रणजीतसिंहजी के पास पहुंच्या, वहां से जैपुर जोधपुर होते अपनी बची हुई फोज से कोटेकी तरफ रवाना हुये। जब हुल्कर ने हुक्म दीन्हो कि पीछी फोज लोटती बखत कोटा को कांकरो कांकरो चम्मल नदी में पटक दो। जब या खबर जालमसिंहजी के लागी जब हुल्कर की फोज की लार सरबराई का आदमी कर दिया सो फोज का लोगां हैं खाण पीण की सरबराई भली रीत पहुंचाई गई। तथा हुल्कर का कारबारी बालाराम सेठ वगैरे की जाग यां कोटा का शहर में ज्या में असबाब धन रखता था सो जालमसिंहजी सूं सब लोग रजू छा। पाछे हुल्कर की फोज का लोट कर डेरा सकतपुर चामल के पैले करड़े हुवा। और हुल्कर ने फोज का अफसरां कूं हुक्म दियो कि मैं दातण जब करूंगा कि कोटा चम्मल में गरद होजावे। जब हुल्कर की फोज का सिपायां सूं अफसरा ने कही जब सब फोज का लोगां ने पीछो

जुवाब दीनो कि जालमसिंहजी झाला को तो नमक हमारे पेट में पड़गयो सो इसके सामने तो हमारा हाथ उठे नहीं आप को हुक्म होवे तो जैपुर जोधपुर पर चढाई करावो तो हाजिर हैं। जब हुल्कर ने मुलाक़ात की ठहराई। देखी के फोज तो बदलगी। जब जालम सिंहजी ने महारावजी सूं कुवाई आप हुल्कर सों मुलाखात करो जब महाराव उम्मेदसिंहजी तो कही मामाजी थांहीं मुलाखात करो म्हातो करां नहीं। जब जालमसिंहजी ने चार आदमी लीना, सहा रखबदासजी सगतपुर वाला और साथ का पासवान चार ४ सो नावां में बैठा कर कोटा सूं आधी चाम्मल में आया। उठी सुं हुलकर नावमें बैठ कर ४ आदम्यां सूं आयो सो बीच नदी में मुलाखात हुई। नावमें हाथ जालम सिंहजी को पकड़ियो और फरमाई अब क्या जोर तुम्हारो। जालमसिंहजी ने आजुर्दी को कलाम कह्यो जब हुल्कर राजी हुवा, हाथ छोडतांई नावां का कीरां ने नावां अलग २ कर छेटी पाड़दी। कोटा की फोज कों जालमसिंहजी पेशतर ही यो हुक्म देराख्यो छो कि हुल्कर किसी तरहकी दगाबाजी करेतो तोबांका मोहोरा नावां पर लगा राख्या छा सो गोलां की देकर दोनूं नावां

ने नदी में डुबो दीज्यो । जिस बगत फोज हजार ५०
कोटा में चामल के तीर पै बंदूकां भऱ्यां खडी छी। पाछे
जालमसिंहजी कोटा में दाखिल हुवा, हुल्कर की सरबराई
करी तीं बखत कोटा में लाल मिरच १) रुपया की ऽ॥ आध
सेर तक बिक गई छी । पाछे हुल्कर की फोज का कूंच
होगया । सम्बत १८६४ की साल में जालमसिंहजी ने
जहाजपुर पर गोरा बजाया, आपणो थाणो बैठायो ।
जहाजपुर के डेरां फोज ने चिट्ठो माग्यो, जब उठे रुपया
हाजर नहीं छा जब गोपालदासजी मेसरी लार छा सो
याने चाकरी सादी अपणे पास सूं फोज को चिट्ठो बांट्यो।
पाछे उदैपुर देबारी पर फोज ने जा गोरा बरसाया ।
राणेजी भीमसिंहजी ने बालेराव हैं कैद कर राख्यो छो
सो छुडायो। कोटे की बाई भीमकँवर बाई की सगाई
राणा भीमसिंहजी सूं करी। हूंकारो राणाजी सूं भरायो।
महाराव गुमानसिंहजी ने जालमसिंहजी हैं बोल दीनो छो
कि मामाजी कोटो तो आपने मुल्कां मांसूर कर दीनो पण
कोटा पर अंडो चढायो नहीं सो चडावो भीमकुँवर बाई
हैं ऊंचे ठिकाणे परणावो जब थां की चाकरी हूं पूरी
समझूंगो, जब उदैपुर पर चढाई ईं बोली पर करी ।
पाछे सम्बत १८७२ में भादवा बुद आठें ८ ने कोटा में

बियाव कर्‍यो राणाजी भीमसिंहजी टूटी सायबी सूं पधार्‍या ५००) पानसो रुपया रोजीना कोटा सूं पीछा कूंच नहीं होवे जब तक देणे को करार जालमसिंहजी कर्‍यो छो । पाछे राणाजी कोटे आया जब जालमसिंह जी सादी पोशाक, लोका मूंठ की तरवार बिना गहणो पहर्‍यां राणाजी की पेशवाई करी राणाजी की टूटी साहबी जाण ने आपकी जलूसी नहीं दिखाई सामने पेश-वाइ लीनी । पाछे बियाव होयो पाछे कँवरजी माधोसिंहजी हैं राणाजी खासा में सामिल लेर बैठ्या नहीं जीपै जालम सिंहजी के रोस आयो सो बरसता पाणी में राणाजी का कूंच करा दीना । हथलेवा में जाजपुर तथा ईटादा की गढी आगे लीनी छी जो पीछी दीनी । अँगरेजां की भी लिखावट थी । भीम पलटण नाम की एक पलटण लार दीन्ही, जब तांई भीम कवर बाई जिया ज्यांतांई पलटण को रुजगार कोटासु उदयपुर पहुंचतो रह्यो । असी चाकर्‍यां जालमसिंहजी ने महारावजी की करी । पाछे सम्बत १८६६ मे जालमसिंहजी के आँख्यां मे मोतियाबिंद होबासूं कम दीखतो छो, पण अपणी चालाकी केसाथ दूसरा कों तोल पडबा देता नही । साथका पास रहबा वाला वाकब करदीना छा सो असाग

में समझा देताछा पाछे बहुत उमर होणेसूं हात धुजणे लागगया छा सो कभी किसी रोज दूसराके हातसूं जीमेंछा । तथा सम्बत १८६५ मे हुलकर के जालम सिंहजी के कांकड को कस्सो पडयो तींपे हुल्कर ने रोस याओ । जब जालमसिंहजी को रवास इसी छावणी मे छो, सो हुलकर की फोज की चढाई छावणी पै ठहरी । तीं पै जालमसिंहजी ने भी फोज हजार ४० चालीस छावणी के आस पास तीन दिन में एखटी करी जब हुल्कर का कारबारियां की मरजी जालम सिंहजी सूं बिगाड़ बाकी नहीं जब जालमसिंहजी के पास सेठ जोरावरमलजी बहादरमलजी का भाई हैं जालमसिंह जी के पास भेज्या । जब जोरावरमलजी सूं हुल्कर का कारबारयां ने कही जोरावरमल तुम जालमसिंहजी हैं जाकर समझावो । म्हांतो लुटेरी फोज का सूबा हां सो थासूं किस्त खाजावांगा तो दूसरी बखत धावो मारांगा, थां जमीदार छो सो थां किस्त खाजावोगा तो सँभलबो भारी पड़ जावेगो । जब जोरावरमलजी छावणी आया जब जालमसिंहजी बी केसरयां कर लीना छा सो आपस में जुवाब साल आछी तरह सामभेद सूं हुया । जालम सिंहजी ने जोरावरमलजी सू फरमाई मो म्हाकेतो हूलकर

सू कांकड मींडो ठह्यो सो बात बात में दबावे सो या कद बणी । महारावजी बी राज श्री नाथजी को दियो करेछै हूंबी दो चार पछेवडी को पावणूं छूं सो महाराव जी को नमक अदा कर दिखाऊं । जब जोरावर मलजी ने जालमसिंहजी सूं अरज करी आपकी बात ऊंची राख खरच कर यो रासो मेटदे जब ईपर जालमसिंहजी ने फरमाई थारी चाकरी दीखेगी । पाछे हुल्कर का लसकर में जोरावर मलजी पहुंच्या उठे जार कार बारिया सूं कही सो जालमसिंहजी ने फोज हजार ५० पचास एकटी कर सिंघ रूप धारण कर बैठ्याछै तीसूं आप कूं ई रासा हैं समेट लेणो मुनासब है, सो हुल्कर हैं समझा दीनो और रासो समेट लीन्हों । जालमसिंहजी भानपुरे पधाऱ्या काम मसल बेठ्या जब जोरावरमलजी हैं सेठ पदवी अठे मिली सरोपाव हजार दो को दीन्हो । हुलकर का कारबारी तथा पेशवा वगेरा जब वांका कारबारी सिंधिया महाराज का कारबारी लालोजी पंडित बगेरे ठकाणा ठकाणा का भला आदमी सहूर दारांहैं कोटा में जगा, मकान बणा न बसाया सलामें शामिल कऱ्या । पाछे सम्वत १८६९ केसाल डेरा छतरपुरे बराज्या । पाछे जालमसिंहजी रोज असवारी शिकार कोतो बाहेनो छो अर मुल्क की गरीब

गुरबां की सुणवाई के वास्ते करताछा । जब मुल्क आबाद हुवा, नाहर छाली एक घाट पाणी पीवेछा जीपे खलकत ने केणावत जोडी । झूंटा देवी देवता सांचा जालमसिंह जीपे जालमसिंहजी ने फरमाई कि औरतासूं केवो सो बाइरां अस्यां मत गावो । सांचा देवी देवता सांचा जालम सिंह । असी तरह सूं केताई देवी देवता हाडोती में छा सो ज्याने परचो जालमसिंहजी हैं बतायो ज्यांकी तो धाम राखी चूंतरा मठ बणा दिया । ज्याने कुछ परच्या नही दिखाया ज्याका नमूना फिका दीना भोपाहैं पटाया इस तरह का जालमसिंहजी का बंदो बस्त छा । जालम थारी धाकसूं देवत भागा जाय । असी याकी आकाई छी । तथा सम्बत १८७४ में उवाट साहब बहादुर अठे आया । आगे खिरणी सिंधिया महाराज लेताछा पाछे उसी सालसे सरकार कंपनी ने लेणी बिचारी । सब रजवाडां का उकील मुखतारां कों दिल्ली बुलाया खिरणी लेणी ठहरी । तींकी सनदां मँडाई, जब कोटा की रियासत में सूं गैंताका माहाराजा शिवदान सिंहजी सहा जीवणराम दील्ली जाबतो लार देर भेज्या । जबसू खिरणी सरकार अगरेज लेबा लाग्या तथा माधोसिंहजी के कँवर मदनसिंहजी सम्बत १८६४ सावण बुद १ जनम्या

हाडों का भाणेज छा । सम्बत १९०३ असाढ बुद आठे ८ देव लोक पधारया, ज्यां की लार भटियाणीजी सती हुवा छावणी में । माधोसिंहजी के खवासीणा कँवर फतेलालजी छा सो सम्बत १८८५ में किशनगढ परण्या नानते सूं जान गई । तीन लाख ३०००००) रुपया लाग्या । तथा नव्वाब मीरखांजी का कबीला आगे शेरगढ का किला में खास बणी जी में रेता छा । अंबाजी इंगलिया का खटला भी शेरगढ का किला में रहता छा । गूगेर को किलो अंबाजी खंडूजी इंगलिया को छो । अंबाजी, खंडूजी तथा नव्वाब मीरखांजी सूं जालमसिंहजी के भाईलाचारो छो और नव्वाब मीरखांजी तो पागड़ी बदल भाईला छा ऊही सनातन आज दिन तक निभतो चल्यो आवे छै । गूगेर का किला के पिछाड़ी डूंगर की लाग छी सो जालमसिंहजी की सलाह सूं अंबाजी ने खाई खुदाई । पाछे जालमसिंहजी चेत्या बिचारी सो या सलाह तो खोटी दी । ई किला में बैठ बावालो हाडोती में राज करे शेरगढ का किलाके लग्गे छे । जब आप गूगेर पधार अंबाजी से कहने सलाह फेरी । जालमसिंहजी अंबाजी सूं कही आप आछया चाले लाग्या लाखां रुपया खरच पड़सी । गढको काई बांको

गढ पति बांको चाहिजे । पाछे अंबाजी ने जालमसिंहजी सूं कही भाईजी साब हमारे पिछाड़ी ओलाद नसल ऐसी नहीं दीखती है सो ऐसी बिभव भोगे । कम नसीबा का दीखेछे । पाछे जालमसिंहजीने कही भाई साहब नारांका खाडूमें तो नाहर ही पैदा हो वेछै । पाछे जालम सिंहजी डेरां पर पधार्‍या जब गोंढे सब लोग खडा छा ज्यासूं फरमाई आज अंबाजीने ऐसे कही सो बात तो साचीछै पछाडी कां का भागतो हलका ही दीखेछै सो वही बरती । पाछे सम्बत १८७६ में सरकार कम्पनी ने नव्वाब मीरखा कों "टोंक" बगसी । जब शेरगढ का किलामेंसूं नव्वाब का खटला टोंक गया नव्वाब मीरखाने परगणा ५ पांच लीना । नीमाहेड़ो तो उदयपुर वालांसूं लीनो पिड़ावो इन्दोर वालां सूं लीनूं । सिरोज सिंधिया माहाराज सूं लीनी । गूगैर, छपडो अंबाजी खंडूजी की ओलाद सूं लीनो । तथा उन बखता में पिंडारा कपूरखां, करीमखां, हीरया, छीतू, दोसमहोम्मद वगेरा गेर मुल्क में दोरो करता था । पाछे जालमसिंहजी ने इसी छावणी में पिडारां का डेरा पटक्या । चैचट परगणे शहाबाद परगणे धंधेरया हैं धरती कुवां गांव काढ दीन्हा अपणे मुल्क को बंदोबस्त कर्‍यो । तथा राजगढ

खिलचीपुर सूं जालमसिंहजी खिरनी लगाई सो आज तांई आवेछे। तथा जालमसिंहजी ने भीलां सूं मनोहर थाणा को किलो सम्बत में लीन्हो या भीलवार भीलां की धराछी। कोई भीमसिंहजी महारावजी की बखत को बतावे छै। सम्बत १८७६ में महारावजी उम्मेदसिंहजी कोटामें वांका कुँवर प्रथीसिंहजी गोरधनदासजी की सलाह सूं जल पिलावे छो जीं कहार का हाथ सूँ जल में जहर दुवायोसो मरगया। पाछे याखवर अठे छावणी में आई जब माधोसिंहजी बी अठे छावणी पधारया छा पाछे सूं यो काम हुवो। पाछे जालमसिंहजी ने माधोसिंहजी सूं हुकम फरमायो तू जल्दी कोटे दाखिल हो, जब माधोसिंहजी घोड़ा बदलता होया कोटे तीन पहर में दाखिल होया, महारावजी की रथीमें लकडी नाख पाछे पायगां में दाखिल हुया। पाछे किशोरसिंहजी हैं गादी बिठाया। पाछे किशोरसिंहजी, पिरथीसिंहजी, गोरधनदासजी तीनू ने सला बिचारी कि जालमसिंहजी हैं भी परापत करदेणा कारबारो प्रथीसिंहजी, गोरधनदासजी करे, ऐसी सला बिचारी या खबर जालमसिंहजी के लागी जब जालम सिंहजी अठे छावणी सूं कूच कर छतरपुर रामचंदर पुरा पै डेरा जा दिया। पाछे महारावजी किशोरसिंहजी

के सलाह बिचारी तींको हाल मालूम पड़ गयो चोगस करी सो गोरधनदासजी की सला छै जब जालमसिंहजी ने माहारावजी सू कुवाई कि बाल्या हैं (बाल्या गोरधन दासजी का नाम था) म्हारी गोढे मोकलो जब महाराव जी ने फरमाई बाल्यो तो म्हारा पेट में हैं। जब जालम सिंहजी ने जोर दीन्हो जब महारावजी ने कुवाई सो आप हैं तो मामाजी नहीं पकडावां काढदयां जब गोरधन दासजी कों लाखां रुपया को असबाव १०० ऊंटां में भर सपाई फोज हजार दोय लार में महारावजी का भाई प्रथीसिंहजी पहुंचाबा गिया। पाछे जोधपुर माहाराज मानसिंह के पास पुँच्या तो मानसिंहजी ने जालमसिंहजी का बेटा जाण जोधपुर में पेठ्या करदीना, जागीरी कढबा की रुपया १०००००) एक लाख की तजबीज बिचारी और या मन में सोची की जालमसिंहजी को भी म्हारे ऊपर जैपुर की फोज जोधपुर पर लडी जब जोधपुर का अमराव चार महाराज मानसिंहजी की लखावट सूं अठे ढाब्या, नव्वाब मीरखांजी सूं जालमसिंहजी कही छी कि आप माहाराज मानसिंहजी कहे ज्यो कीज्यो। यो अहसान मानसिंहजी पै जालमसिंहजी कोछो तीसूं ढाब्या। गोरधनदासजी हैं पाछे अठासूं असारो पुंच्यो

जोधपुर में बरेठ्या मोदी सूं जुल्म गोरधनदासजी कर्‍यो जब उठा सूं भी काढ दीना सो दिल्ली पुँच्या सो दिल्ली में बरस १० रह्या सो सब तरह सूं खराब हो गिया। जब खवासजी जवारजी ने माधोसिंहजी सूं अरज कर सम्बत १८९० आसोज में बुलाया पगां माधोसिंहजी के लगाया। पाछे नानता में जाग बलदेव बजार में बतादी सारो लवाजमों कर दीनो। तथा सम्बत १८७७ में महाराव किसोरसिंहजी के और जालमसिंहजी के आपस में प्रथीसिंहजी ने फिसाद खडो कर्‍यो। जब शेख सेफुल्ला की पलटन माहारावजी में जा मिली। जब माहारावजी गढ में सूं असवार होर पायगां पै धकाया जब पायगां में खबर माधोसिंहजी के पास लागी, जब जालमसिंहजी छत्रपुरा का डेरा पै छा। पाछे उसी बखत उठा सूं असवार होर पायगां में आया माहारावजी के रस्ता में खबर लागी कि मामाजी पायगां में दाखिल हुवा। जब माहारावजी पीछा गढ में गया फोज का लोगां के माहारावजी के असारो पेली बखत को पिछले दिन को हुवो छो सो वे चढते दिन का गढ में सूं निकल्या तीसूं रासो बिगड गयो, जालमसिंहजी चेत गया पाछे गढ में की तोपां पायगां पै पेली चाली जालमसिंहजी ने विस्टाला पट

किया लेकिन प्रथीसिंहजी ने एक भी बात किसोरसिंहजी के आसे आवा दी नहीं । पाछे माहारावजी के छोटा बेटा बिसनसिंहजी अणता वाला गढ में सूं भागर पायगां में जालमसिंहजी की गोढे आ गिया, कही मामाजी हूं तो आपकी लार छूं । जब जालमसिंहजी ने खातरी करी राख्या । पाछे जोरावर बुरज की तोप पै हुकम पहुंच्यो सो तोप चालबा में मोरो फेरबा में देर लागी जतरे गढ की तोपां, बाण, पायगां पै जारी हो गिया जालमसिंहजी चौक में बैठ्या उस बगत पै सब चाकर बावर हाजिर छा । तोप जोरावर बुरज की चाली तो रात ने माहाराव जी गढ में सूं निकल नावां में बैठ पैले करड़े उतर गया हाडोती में लूटा खोसो कर, माधोपुर दिल्ली तांई जार पाछा फोज हजार २० बीस बणार मांगरोल पर डेरा हुवा । जालमसिंहजी और टाट साहब सरकारी अंगरेजी फोजां रसाला पलटण लेर जालमसिंहजी की लार मांग रोल पर डेरा ओली तरफ हुवा । पाछे साहब बहादुर जालमसिंहजी से एक पोटली में पांच मोहर और एक पोटली में दारू गोली राखी दोनू पोटलियां लेकर माहा रावजी की फोज में पहुंच्या उठे जार दोनू पोटल्यां रख दी और कहदी सो आपकी मुरजी होवे सो करो । जब

माहरावजी किसोरसिंहजी की मुरजी तो मोहारां उठाबा की छी पण प्रथीसिंहजी ने उठणे दी नहीं, दारू गोली की पोटली उठाई। पाछे साहब बहादुर उठा सूं हाथीं पै असवार हो हाथी हैं भगाता आया, उपर से चद्दर फेरी जब दोनों तरफ फोज जम रही छी। जालम सिंहजी पाल की में असवार छा। पाछे माहारावजी की तरफ सूं घोड़ा उठाया जालमसिंहजी की तरफ सें भी तोपां पै वत्ती पड़ी। प्रथीसिंहजी लालाजी पंडित की पायगां की तरफ खड़ा छा सो आप जाणी कि म्हारी लार का असवार खड़ा छै पण पायगां पंडितजी की निकल गई सो याके और पायगां का सवारां के बोली बाणी हो गई सो तीन सवार पायगां का प्रथीसिंहजी का हाथ सूं मारया गया। पाछे मल्हारराव पाइ गियो पायगां में वारगीरां में छो सो ऊंका हाथ को बांस प्रथीसिंहजी के लाग्यो सो घोड़ो तो तोपां पै पहुंच गयो छो पण प्रथीसिंहजी उठे गिर पड्या। पाछे माहा रावजी की फोज भाग गई। पाछे जालमसिंहजी और टाट साहाब फोज सुदां कोटे आया जब माधोसिंहजी ने जालमसिंहजी सूं अरज करी दाजी साब बिसनसिंहजी भी माहारावजी का फरजन छै सो याहैं गादी बिठादो।

जद जालमसिंहजी ने फुरमाई मैं सूं अस्यो हराम खोरो नहीं बणे। बारा बरस तो माहारावजी की पावड्यां राज करेगी। जब टाट साब ने जालमसिंहजी सूं कुवाई मुनशी की लार सो कोटा का शहर में तो दुहाई माहारावजी की रामपुरा में दुहाई जालमसिंहजी की। एक रोटी का दो टूक करद्यां। जीं पै जालमसिंहजी ने हुकम फरमायो मुंतो एक दो पछेवड़ी को पावणूं हूं सो मैं सूं तो अस्या काम होवे नहीं, आप हैं करणां है तो माधोसिंह से कुवावो सो ऊंके आसे आवे सो करे। जब टाट साहब तथा वलकम साहब ने मुनशी हैं पायगां में माधोसिंहजी के पास भेज्या योही जुवाब कुवायो तींपे माधोसिंहजी ने फुरमाई, साहब बहादुर मे हमारी सलाम बोलो और अरज करो सो हमें बडा ताज्जुब नजर आया कि सरकार कंपनी की हम चाकरी में पुंच्या जीं की बहतरी तो कुछ न पाई आधा राखणे की मुरजी देखी। हाल में तो कोटा की सारी रयासत म्हांके पास छे माहारावजी हैं तो ५००) पान सो रुपया राज कर दीना सो खावो, म्हांका तो माथा सूरजपोल दरवाजे लग रह्याछे म्हां में जुरियत छे तो सारी हाडोती में म्हां कोई राज छै, म्हां में जुरियत न होसी तो आधा कोटा में कुण रहवा देसी,

असी रीत जोमरदी को जुवाब दीन्हों । पाछे महाराव किशोरसिंहजी नाथद्वारा का गुसांईजी की मारफत कोटे गढमें आण बैठ्या। पाछे सम्बत १८७८ में कोटा के बारे रामचंदरपुरा की छावणी जठे जालमसिंहजी बीराज्या चाकर लोगां ने मकान दुकानां बणाई.। पाछे सम्बत १८७९ का फागण में मदनसिंहजी को बीहाव रामपुरा का राव की बेटी सूं हुवो बरात गई । सम्बत १८७९ में कोटा के बारे नवापुरा में अँगरेजां को बँगलो बण्यो कंटनजन फोज रहबा लागी। बलकन्सन साहब रह्या। सम्बत १८८० आसाढ बुद ४ जालमसिंहजी रामचंदपुर की छावणी में देवलोक हुवा । पाछे माधोसिंहजी तो पायगा में रहबो कर्‌या पाछे सम्बत १८८१ का काती सुद १५ हैं गोठडा का बलवंतसिंहजी बेटा सुदां केशोरावजी की पाटण आया छा सो साहब सूं इत्तला कर फोज भेजी पेले करड़े बलवंतसिंहजी लड़ाई लड्या । सोना की गोल्यां चलाई जीं बखत सीसा की गोल्यां की कमी होगी जद हातां का सोना का कड़ा काट २ बंदू का में भर २ चलाया । जब रसद पास न रही जद नदी के पेली पार जावे छा सो बीच में रस्ता में हलकारो बिरामण मिल्यो ऊने आसरीबाद दीनो जब कँवरजी ने कही

दादाजी साहब माथा में दो न तो ऊ वांसू जार
कहसी । जब बलवंतसिंहजी ने कही बेटा ब्राह्मण है
हत्या लागसी सो पांच महोर दे बिरामण कों बिदा
कर्यो । जब ब्राह्मण पेट पकड्यां दोड्यो गयो और
फोज में जाकर.कई कि थांका बाप तो नदी में पड़कर
जावेछे । जीं बखत बलवंतसिंहजी आधी नदी उतरता
छा सो नदी में उतरतां २ मारलीना । पाछें संवत १८८२
में माधोसिंहजी नानते गढ में बिराज्या नांनता में
केशोगंज बसायो । पालकी खाना को काम नानगो
पटेल करतो छो । मूडे आगे लाला शादीलाल बलवंत
राव काम करताछा । चाकर लोगांपर बहुत महरवानगी
छी । पाछे सम्बत १८८४ में महाराव किशोरसिंहजी तो
गैरहाजर हुवा गादी पर प्रथीसिंहजी का बेटा रामसिंहजी
बैठ्या । दसरावा की कमर को दस्तूर माहारावजी को
करताछा । माहारावजी असवारी कर बाहर पधारता तो
झालां की बे इत्तिला बारे जावो न होतो । फोज पै
हुकम झालां को पूंछ तो जब माहारावजी की लार
लागता । तथा सम्बत १८८७ का सावण सुदी सातें को
जनम प्रथीसिंहजी को कोटा को छो । यह प्रथीसिंहजी
चंद्रावतां का भाणेज छा सो सम्बत १९३२ का भादवा

बुद १३ ने देवलोक पधारया। तथा सम्बत १८८७ में माधोसिंहजी पुष्कर पधारया। सं १८८८ में लाठ साब ने सब रइसां कूं मुलाकात के वास्ते अजमेर बुलाया जब कोटा सूं माहारावजी तथा माधोहिंजी बी अजमेर गया। पाछे उठे गया जीं रात चोर उठाई गीरांने चोरियां पांच दस जाग करी। पाछे दूसरे दिन माधोसिंहजी नें बंदोवस्त करया सो फोज लसकर का डेरा में परंदो भी धसबा पावे नहीं पाछे माहारावजी लाठ साब का दरीखाना में पधारया माहारावजी के डेरे लाठ साब सीख देबा पधारया जब माधोसिंहजी ने भी लाठ साहब सूं कोटा का अजंट काफी साहब की लेर आप के डेरे लाठ साहब हैं बुलाणे की तजवीज बिचारी सबब नव्वाब मीरखांजी के डेरे लाठ साहब पधारया मीरखांजी हुल्कर को ताबेदार छो। म्हां कोटा का छां जीं पै लाठ साहब फरमाई हमतो यही चाहते हैं कि आप कों रियासत लाख १५ की दुवा के नाला राजा करादां। आप या कबूल करलो तो हम तुम्हारे डेरे आवां जब माधोसिंह जी ने कबूल करी नहीं। कोटा का एजेन्ट साब की तहरीर खलीता में मडाली याबी दस्तावेज रही। उठेई कुनाडी का झाला राज उरजनसिंहजी गेरहाजर

हुवा त्यांका दाग में लोका चार में माधोसिंहजी पधारया पाछे सूं जैपुर का माहाराज की असवारी की लेनडोरी कोटा का लशकर के बीच में पटकता था । जब लेन डोरी बीच में पटकणे लाग्या जब माधोसिंहजी के पास खबर लागी तो आपने हुकम दीनो कि तोबामें जंगी डाल महताबा जोदो । आपणे तो जैपुर वालांसूं भटवाड़ा की राड़ को आंटो छे सो या बात कबी नही होवे । फेर बगल होर जैपुर का माहाराज की असवारी टल के निकल गई । ऐसी जुरियत माधोसिंहजी में थी । सम्बत १८८८ मदनसिंहजी की छोटी बडी बायां का बिबाहहुवा । पाछे सम्बत १८८९ में काम वालां की सला लागने मुल्क में मनखां बराड़ लागायो । पाछे कोयला का छप्पनजी ने कोयला सूं बंद कर‍्या । पाछे सम्बत १८९० में फागुण बुद ३ हैं पांसली की बीमारी सूं माधोसिंह जी माहाराज देव लोक पधारया । कुछ जादूं काभी शुबा फूतलां का दुनिया रखती छी । पाछे नुखता के बाद सब चाकर लोग मदनसिंहजी की चाकरी में हाजिर हुवा तो कनीरामजी सुराणा सू हुकम फरमायो कि थांलोग दाजी साब की चाकरी में रेतेथे उस परवाण सब लोग मेरे गोढे रहो जवसे कनीरामजी की ज़ुबानी पै सरकार ख्याल

करयो। पाछे सम्बत १८९१ में चैत में राणा जवानसिंहजी तीरथ कर पाछा पधारया जब मदनसिंहजी अणता का डेरां तांई सामने पधारया। जीं साल रोग चालो कोटा में फोज में छो। पाछे सम्बत १८९३ में रास साहब बहादुर आया ज्याने शिकार खिलाबा मदनसिंहजी की कोटा सूं असवारी पाटण पधारी सो लोठियाझिर को हांको छो जठे मेंढा पै राम साहब, मदनसिंहजी और लालजीराम धाबाई तीनू मेंढा पै बैठ्या छा उठे रास साहब ने मदनसिंहजी सूं कही आपके हमारे दोस्ती है इस वास्ते हम आप से कहते हैं कि हम बिलायत कूं जावेंगे। आप की तो जुरियत है पिछला की इतनी करतबवारी जुरियत नहीं होई जब रियामत को काम कुण करणे देगी। जिससे हम आपके दोस्ती के सबब इतनी कहते हैं कि आप अपना नाला राज बटालो, चंवर मोरछल उड़ावो। जब मदनसिंहजी के आसे आई तो उस बखत साहब ने अपनी जेब में से सीसा की कलम कागद निकाल कर दसखत मंडा लिया कि सरकार कंपनी हमकूं जो मुल्क देकर राजा कर देगी सो हमकों मंजूर है दस्तावेज छोड़दी अतनी बात सरकार कंपनी केई साहब लोगों से हुकम पेशतर फरमाती थी लेकिन

किसी से यह काम न बन सका सबब कोटा की रियासत को तरीको जोड़ तोड़ सरकार कंपनी बोत जानती थी इस वास्ते दो रियासत करदे तो कमजोर पड जावे इस सबब से पाछे रास साहब बिलायत कूं जाकर बादशाह जादी को दस्तावेज मदनसिंहजी की बताई जब उठा सूं लडरू साहब तथा अनफी साहब मुकर्रर होकर सम्बत १८९४ का चैत में कोटे आया कोटा में कई तरह की जोर शोर की बातां माहारावजी से तथा मदनसिंहजी से करी । पेशतर तो सात लाख को मुल्क देणे बदले साहब ने मदनसिंहजी से कही । जब मदनसिंहजी ने साहब से कही आप अगाड़ी की तहरीरां दस्तावेजां पर निगाह फरमावे । मेरे लार फोज और चाकर लोग जावेगा उन सब कूं जुवार की रोटी तो दी चाहूंगा । जब साहब लोगां ने बिचारी के चालीस ४० लाख का मुल्क में जो अपने हाथ से खरच करते थे सो अब ७ सात लाख में अपनी रियासत का बंदोबस्त नहीं कर सकेंगे । मदनसिंहजी ने दस्तावेज रास साहब हैं लिखदी थी उस सनद से दबाया । पीछे तीसरी पांती का राज की मंजूरी मदनसिंहजी सूं कराली । नहीं तो बिलायत से आधों आध की तहरीर छी सदर से । यहां सला में

कनीराम सुराणा, लाला शादीलाल, राय उरजन, मुनशी पन्नालाल रियासत का बटवाड़ा की सला में थे । पाछे सम्बत १८९४ वैशाख बुद १३ ना कोटा सूं पायगां से चँवर मोरछल उड़ाता माहाराज राणाजी साब मदनसिंहजी पाटण छावणी पधास्या बैसाख सुदी ३ कों छावणी दाखिल हुया । रस्ता में जगपुरे आणंदपुरा के डेरे श्रीदरबार के दुशमना के हेजा की बीमारी होई पीछे रयासत का लोगां की किसमत मे श्रीनाथजी माहाराज ने खुशी करी । तथा कितनाईं चाकर लोग श्री दरबार से शस्त्र, मोहोरां ले कर कोटेई बैठ रहे । माहारावजी का भला आदमी सब रयासत का लोगां में फिर कर कहते थे कि झालां की लार मत जावो तुम्हें रोजगार जागीर खाण पाण दूणा माहा रावजी देवेंगे । इनकूं तो दरे की नाल में लूट लेवेंगे, मार डालेंगे । इस तरह से कह कर कितनाहीं चाकर लोगां का दिल फेर दिया सो उठेई रह गया । हरामखोरा बिचास्या तो उनकूं कोटा में माहारावजी ने लूट लिया । कितनाक मर गया लेकिन हरमे हरामखोर होने से अच्छी किसी की न होई । जो कि दिल के मजबूत थे झालां का नमक में शरीगत थे वे लोग लार आये । सो दस पँदरा आदमियों की तो जाग मकान अपने

बड़ों का बणाया हुवा था जिसमें आण उतरे । और कितनाक लोगां ने जो जगा सूनी देखी ऊमें धस बैठ्या यह सूनी जायगां उन लोगों की थी जो कोटा में रह गया साथ आया नहीं । पाछे श्री दरबार की लार आये जिनकूं खाणेकूं जागीरी, धरती, रुजगार वगेरे सब कूं पट्टा परवाना बखशा । सम्बत १८९५ का सावण भादवा में मंडिया सो तो लारका, पछे मड्या मो पीछे । कोटा की रियासत में करजो ३६ लाख को छो तीमे १२ लाख को तो तीसरी पांती को झालावाड वालां के पांती आयो और २४ लाख को कोटा की पांती में रह्यो । कोटा सूं पांच हजार आदमी के करीब लार आया जीं में उमराव, नोकर, चाकर, और फोज थी । सहा अमावचंद कूं श्री दरबार खातरी का जाण कोटे पायगां को असबाब लेणे ना भेज्या सो तीन महीने लग तमाम असबाब उठे गाडां में भर कर अजंटी का चपरासी व घासीराम की सायदी सूं छावणी भेज्यो । खजानची माणकचंदजी की जुबान से कोटा को बटवाडो होयो । ओवरी तो माहागव जी की छी जीं को तो माल तीसरी पांती को आयो और सम्बत १८८२ में नानता में माधोसिंहजी ने तोसा खानो घरू बणायो छो सो ईको माल सारो आयो बटवाडो

होयो नहीं । तथा नानता की रवास में और गढ की रवास में बिछायत छी सो घरू छी सो साहब तीसरी पांती दुवाबा लाग्या सो लीनी नहीं बिछायत कीमती १ लाख रुप्या की छी जो माहारावजी के रही । तथा जो लोग माहाराज राणाजी की लार आया ज्यांकी नांव पनाई की फरद अंगरेजी मुनशी अहमदअलीजी मुकबर इलाईबगस लार छो अठे रह्यो तीने बणा कर लाठ साहब के पास भेजी । तथा कोटा की और झालावाड की सरहद का मदारा अल्फी साहब की राय सूं बँध्या । सो चेचट का तालका से छीपाबड़ोद लग जिसमें कई तो नदी की धार से हद बांधी कई खाल से कहीं माल से । पाछे सम्बत १८९५ में आसोज सुद १० पर भीमगढ में रावण बण्यो सो हद तो झालावाड की छी मारने कूं माहारावजी का भीमगढ का कलादार आया सो छावणी सूं जाबतो गयो । ठाकरां पेमसिंहजी को कारबारी में तो खुसालजी तथा अफसर पटेल लालो मेता दोलतसिंहजी सों उठे झगड़ो होयो । दोनों तरफ का आसामी मारया गया, लेकिन फते माहाराज राणा श्री मदनसिंहजी की रही, कोटा वाला भाग गया । पाछे सम्बत १८९६ में छावणी में खालसा की जायगां की पानड़ी वणी, पालकी

खाना को जमादार गोमदो, अजीठण करामतअली की मारफत जिसमें कितनीक तहसील हुई । तथा सम्बत १८९६ सेठ पदवी हाथी सेठ कनीरामजी सुराणा हैं श्री दरबार दुकान पर पधाग्या जब बखशी । पाछे सम्बत १८९७ के साल खींवच में छावणी अंगरेजां की पड़ीं सम्बत ९९ में पीछी उठाई गई । सम्बत १८९९ के साल श्री मदनसिंहजी आगरे लाठ साब मे मुलाखात करबा पधार्‍या । उठे तुकमो मिल्यो । इंगरेजी बीबियां को नाच दिखायो । तथा सम्बत ९८ फोज को चिठ्ठो चढियो छो सो दंगो हुवो तीमें चिठ्ठो महा अमावचंद के हाथ से श्री दरबार खातरी का जाण तीन लाख रुपया बटाया कनी रामजी रोजीना का पचीस हजार भुगताया जब कतनी फोज टूटी छूटी । तथा सम्बत १९०१ असाढ में माहाराज राणाजी श्री मदनसिंहजी जेसलमेर का राजा रावलजी गजसिंहजी का सगा भाई की बेटी को डोलो सहा अमाव चंद कों भेजने मंगायो । दुरगपुरे बिहाव कर्‍यो या चाकरी सहा अमावचंद की समझी सबब माहारावजी रामसिंहजी तो जैसलमेर जार यांकी भुवा परण्या भतीजी हैं सामे डोलो लार परणाई या बात रजवाड़ो में बोत ऊंची रही जी सूं सहा अमोलकचंद की चाकरी समझी । तथा सम्बत

१९०३ असाढ बुदी ८ माहाराज राणा मदनसिंहजी देव लोक हुवा भटियाणीजी साहेब सती हुवा। बीमारी तो कुछ न होई गुसांईजी ने जादूं करायो सो जंतर निकल्या सो जंतर खोलणे वालो सुनार छो सो सरड़ी हो गियो जंतर बरामण कसन्या बाल्या सूं अमावचंदजी पाटण में सूं लायो ईं काम को बिस्तार तो ज्यादा छे इस में थोडो लिख्यो छे। तथा पाछे माहाराज राणाजी श्री प्रथीसिंहजी गादी बिराज्या मूंडे आगे काम कर्नीरामजी, हिन्दूमलजी, धनरूपजी करता छा। सम्बत १९०४ महीना माहा में श्री दरबार प्रथीसिंहजी को बिहाव चौमू नाथावतां के होयो फोज को चिट्ठो चढ रह्यो छो सो फोज का सिपायां ने डेरा बारे हो गिया छा जद दंगो कर्‌यो सो फेरा टल गया पाछे फोज वाला सिपायां ने हिन्दूमलजी बेटा सुधां पीटिया, इज्जत, ली केद करया। पाछे काम में बोलचाल पंरोत जीवणरामजी, ठाकर धनरूपजी, बहोरा उदेरामजी को छो। बिहाव का त्याग में रुपया तीन लाख बट्या। पाछे पीछी सवारी बिहाव कर पधारी जब भटियाणीजी को डोलो घोड़च सूं महा अमावचंद पासवान राधाकिशन दोनों जणा लाया। बिहाव सुखेत में कीन्हो। पाछे सम्बत १९०५ का साल में रियासत का करजा को खरच का कमा

बेसी को बंदोबस्त होयो, जीमें कीतनांही चाकरां अमरावां का खाण पीण घट्या। पाछे सम्बत १९०६ का साल में रियासत को काम कल्लु जुर्रो, पासवान राधाकिशन ने सहा हिन्दूमल हैं खड़ों कर धनरूपजी है तो ऊंकार नाथ दरसण करबा गया सो फेर छावणी में आया नहीं कोटे माहारावजी के पास चाकर जा हुवा सो सम्बत १४ का गदर में तोप कें मूंडे बांध मारया गया अस्यो हरामखोरो आडे आयो। तथा सम्बत १९०७ का साल में हिन्दूमलजी का कारबारयां में गोपाल बांक्या का कहबा सूं हांसल पर कालो लगायो जी सूं माहूकार सारा पाटण का निकल कर घाटोली माहारावजी का राज में जा बैठ्या पाछे मनाबा अजीठण सातखांजी, धाबाई बगसूरामजी सहा हिन्दूमलजी गिया सो मूहण रामजी भुवानीशंकर को गुमाश्तो गणेशराम ना बीचमें पटक कर मनालाया। बहोराजी नाथूलालजी सूं अमी हजार डंड का लीना। उदैरामजी हैं छावणी में सूं जातराकी सीख दी। पाछे केताही दिन सहा हिन्दूमलजी काम श्री दरबार के मूडे आगे कर्यो। पोतेदारो मुथरा का सेठां को गुमासतो चतरभुज को छो। पाछे सम्बत १९०९ में पचोली देवकिंसन की जुबानी सूं काम रियासत को होयो

पाछे सम्बत १२ में सहा भूरजी छाजेड़ की जुबानी रियासत को काम हुवो । पाछे सम्बत १४ का भादवा सुद ३ हैं फरंट फोज पेशवा की नाना साब तांतिया टोप की छावणी में आई उस दिन छावणी को गढ तियार बण गियो सो परणीजियो, छावणी लूटी कई लोग मारया गया श्री दरबार अपनी चालाकी से निकल गये । चौबे गैंदा लार छा इसका हाल तो बहोत है लेकिन मुफस्सिल जुजवी लिखा है । पाटण बच गई आफू की पेटी एक लार रुपया १०० ब्योपारियां सूं लीना । उस बखत बंबूल्या वाले सेठ गंगाराम रिखभचंद सूं कई लाख रुपया लेकर १३०००००० लाख की भगत पेशवा की कीनी । हाथी, घोडा, तोबां असबाब लूट ले गया । उस बखत जुबानी उदयरामजी की चाले छी । तथा सम्बत १९१८ में महा बुद में बाईजी साब को बियाव अलवर वाला रावराजा श्री सोदानसिंहजी सूं हुवो काम पासवान राधाकिशन की जुबानी सूं तीसे रुपया लाख अग्यारा के खरच पडया । साहब लोग बाईस, मैमसाहेब ४ अठे बिहाव में श्री दरबार बुलाया सो आया जलसा बहुत अच्छा हुवा । महाराज कुमार श्री रानीजी नाथावतजी के पैदा हुवा । पाछे श्री दरबार सब चाकर लोगा हैं यानी कुल रियासत

का आदम्या हैं एक दिन में लाख रुपया का सरोपाव कपड़ा और जवाहिरात और जेवर बांट्या खुशी करी। पाछे श्री दरबार मंमई की सफर करवा पधारया। जनेऊ पंडलपुर में धारन करी, पाछे सूं अठे माहाराज कुमार गैरहाजिर हुवा। पाछे सम्बत १९१९ में आगरे लाठ साहब की मुलाखात करबा श्री दरबार पधारया काम में पासवान राधाकिशन को बोल छो। पाछे सम्बत १९२१ का सावण सुदी १५ पुनम के दिन पासवान राधा किशन वगेरा काम करता छा जिनकूं कैद करया। रंगरेज पीरिया के सुपरत रियासत को काम हुवो। राधाकिशन पासवान वगेरा पर ९ नो लाख रुपया डंड का हुवा। जिसमें आठ लाख के आसरे वसूल होया और कुछ बाकी रह्या। जहारात में जुबानी बहोरा उदय रामजी की चाले छी सरेवान सब ऊपर पासवान पीरयो छो। पाछे सम्बत २२ बाईस में ऊनाला में पासवान पीरबखस कों कूकी भगतण के बारणे पिछली रातकूं किसी ने तलवार सूं मार डाला मारने वाले का पता लगा नहीं। पाछे सम्बत १९२२ में किशन भंडार पर हरख. चंदजी छाजेड़ हैं मेल्या। पहली तो तोसाखाने भूरमल जी के दुजाली कितने दिन रह्या। २) दो रुपया रोज

पाया । पाछे सम्बत १९२२ में बाईजी साहिब को गूणो हुवो अलवर का रावराजाजी श्री शिवदानसिंहजी अठे पधारया । बाईजी ने विदा करया साज बाज सामान भला आदमी लार दीना । जब जवाईजी साब श्री राव राजा शिवदानसिंहजी अठे चार महीना बिराज्या सो खरच सब हरखचंदजी का हाथ सूं उठ्यो । इनके इन्तजाम से श्री दरबार माहाराज राणा साब श्री प्रथीसिंहजी खुशी हुवा और इनको जागीर बखशी और पीनस बैठने को बखशी । यह हरखचंदजी पहले सम्बत १९०६ में पचपहाड़ का तहसीलदार किया गया । फिर किसी कारण से रुजगार छोड चल्या गया सो जब श्री दरबार बंबई पधारया जहा इन्होंने चाकरी आछी साधी जब श्री दरबार खुशी होकर अपणे साथ लिवा लाया और किशन भंडार पर पोदार कर दिया फिर पासवान सहा राधाकिशन के चले जाणे के पीछे पीरया लीलगर व हरखचंदजी ने सामल होकर काम कऱ्यो उस बखत में हरखचंदजी के सुपरत चोमहला को काम हुवो सो किशनभंडार पर बैठ कर देखता और झालावाड का परगणा तोपखाना की कछेड़ी वा सरबंदी वा दफतरसदर कोठार हैं बांट दीना और काम अपणा २ जिल्ला का करता रह्या, एक कारबारी

नहीं रह्यो । परिया के मर जाणे बाद सरब काम में बोल चाल हरखचंदजी की रही । पालकीखाना के और तोशा खाना के सुपरद भी परगणा था । यह हरखचंदजी रहणे वाले किशनगढ के थे । पाछे सम्बत २१ में श्री दरबार आगेरे लाठ साब से मुलाखात करबा पधारया और वहां से अलवर पधार कर बाईजी साब हैं लार लुवा लाया और वहां का कामदार पंडित रूपनाराणजी से भी छावणी में बुलाने का हुकम फरमा आये थे । फिर छावणी पधार श्री माहाराणी नाथावतजी साब कों साथ लेकर जगदीश की जात्रा और गया श्राद्ध करने पधारे सो जगदीश की जात्रा कर कलकत्तो देख्यो हरजगह तीर्थों में स्नान किया और तीर्थ गुरु को जागीरें बखशी । फिर सम्बत १९२५ में पंडीत रूपनाराणजी हैं दुवारकादास सरावगी मुथरा वाला हैं भेज कर बुलाया सलाम हुई । सरोपाव बगस्यो कलम दान बगस्यो कुल रियासत को इखतियार दीनो । फिर श्री दरबार कायम मिजाज रह्या नहीं जब पंडितजी ने सीख मांगली । जब श्री दरबार तो सीख नहीं देता छा पण पंडितजी को दिल सरकार की जबानी देख विगड़ गयो सो बे रुजगार लियें चाल्या गया । तथा सम्बत २५ में रियासत में लंबर यानी कुल गामों का

ठेका हरखचंदजी की और जमादार बखशूरामजी की सलाह सूं बाध्या। तथा सम्बत २७ में श्री दरबार अजमेर पधारया अजमेर में आम दरबार हुवा बहुत से रईस जमा हुये उस वक्त जोधपुर के माहाराज तख्तसिंह जी की बैठक पर अड़बड़ पड़ी जब माहाराज तख्तसिंहजी नाराज होकर मूंछ पर हाथ धर वापस जोधपुर पधार गये। श्री दरबार प्रथीराजजी माहाराज ने पुष्कर स्नान किया और पुष्कर गुरू कों गांव दिया। सम्बत १९२९ में श्री दरबार मय माहाराणीजी साब श्री नाथावतजी के श्रीजीद्वार दर्शन करबा पधारया। पाछे उठा सूं उदयपुर राणाजी श्री शंभूसिंहजी से मुलाखात करबा पधारया। प्रथम मुलाखात माहाराणाजी साब श्री शंभूसिंहजी से माहाराज राणाजी की शंभूविलास में हुई सादगी से, बाद कों आमखास महलों में हुवा जहां सोला बत्तीस उमराव छा। और उमरावां का बखशी रदीलालजी और रियासत का वकील लाभचंदजी की मारफत मुलाखात हुई। श्री दरबार अपणे डेरे से मय लवाजमा रियासत त्रिपोलिया तक पधारया और बखशीजी वा उमराव सामा आया और दरीखाना में पधरा ले गया। वहां रियासत के कायदे के माफिक अपनी बैठक पर बिराजे।

और कई दिन तक उदयपुर में बडे आनंद के साथ बिराजे और दोनों राजाओं में बहुत इकलास रहा और लाभचंदजी को रियासत से एक गांव जागीर में बखशा गया जो आज दिन खाते हैं और उदयपुर में रहते हैं और इनके भाई किशनचंदजी हिन्दी के मुनशी निहाल चंदजी की गोद रहे और जागीर मिली। श्री नाथावत जी साहब के दुशमने की तबीयत उदयपुर से बिगड़ी और श्री दरबार छावणी पधारे परंतु श्री माहाराणीजी साब की ज्यादा तबीयत बिगड़ गई सो एजेन्टी बंगले में ही जलेब लागी और उठेही बिराजा सो मगसर बुद १३ हैं माहाराणीजी साहब देवलोक पधार गया। पाछे माहारानीजी साब को द्वादस कर्म होने के पाछै माहाराज कुमार बखतसिंहजी पर मुरजी हुई और होली दसेरो को राम राम सतकार रियासत का जागीरदार वा उमरावों के साथ आव जाव को हुवो सम्बत १९३० में बडवाण गुजरात सूं माहाराज कुमार बखतसिंहजी कों लल्लूजी जोतसी लाया और श्री दरबार की नजर हुई सब रियासत ने दरबार की नजर करी लिखा पढी पेली होई सो हमारी औलाद नहीं होवे तो बखतसिंहजी गोद छे। और जो औलाद हमारे होवे तो बखतसिंहजी

हैं जागीर हजार २० बीस की दी जासी। पाछे सम्बत १९३१ में जागीरी हजार बीस की चरेल्या का तालका की और बाकी माजी की नानीजी की बी जागीरी हजार ३ तीन की कढी। घोडा, पासवान बगस्या। तथा सम्बत १९३१ का बैसाख सुदी ३ हैं राणीजी श्री सोलखणीजी साब का लूणावाड़े से भला आदमी भेज कर डोला मगाया और बियाव पच्चपहाड का महलां में सेठ मगनी रामजी सुराणा की जगा में हुवो श्री दरबार ने तोरण मार्‌यो और बड़ी धूमधाम सूं बियाव हुवो। सेठ मगनी रामजी पच्चपहाड में मोतबिर आदमी छा। अठा सूं डोलो लेणे सारू अमरावा ठाकर बिजैसिंहजी सारथल वाला और अजीठण मैबुल्लाखाजी हैं भेज्या। कँवरजी बखतसिंहजी को जनम बडवाण को सम्बत १९२० मगसर बुद ३ को छो। सम्बत १९३२ भादवा बुदी १३ पहर रात गिया पाछे श्री दरबार प्रथीसिंहजी श्रीजी का चरण पाया। बीमारी बहुत रोज तक सुजाक की रही। डाकटर ने इलाज करयो। सुवा जादू का भी सुना था। पाछे तीसरे भादवा बुद सातम को होयो सो दोपेरी की बखत साहब एजेन्ट मेवर साब बहादुर कोटा सूं छावणी में दाखिल गढ में होया। सब की खातरी करी।

रियासत को बंदोबस्त राख्या कारखाना पै तो सब लोग बन्या रह्या । भादवा बुद १४ कों दाहकर्म कर आया जद जालमसिंहजी की दुहाई फेरी । पाछे हटनाले खुली । पाछे नुखतो होयो पाछे छोटा राणीजी का महल की तेकीगात तीन दफे हुई वांकी डोढी को बंदोबस्त बडवाण वाला के सुपरत हुवो । पाछे कुंवर बखतसिंहजी हैं बडा साहब रजीडंट साहब बहादुर पढाबा के वासते अजमेर भेज्या । पाछे मफग्डंट अजंट माहब हेवट माहब वहादुर मुर्कर सदर से होया, ज्याने रियासत को इन्तजाम बांध्यो । बरस १६ तथा १७ तक ठहरया । दरमियान में तथा पाछे कुछ दिना के वासते केई अजंट साब इसी रियासत का काम का इन्तजाम बंदोबस्त वासते कोंसिल सिरदारां की रायसूं काम करते रहे । कोंसिल में ठाकर साब बिजैसिंहजी, मेठ हरखचंदजी, धाबाई बखसूरामजी, आपजी नरपतसिंहजी, धाबाई सोबखसजी, माहाराजा बलभद्रसिंहजी, कुवर शिवदानसिंहजी, धाबाई हरलालजी वगेरे रहे । किसी बग्वत कौन रहै किसी बखत कौन रहै अजीटन महबुल्लाखांजी । तथा सम्बत १९४१ का फागण में अव्वल इखतियार माहाराज राणा जालमसिंहजी कूं बड़ा साहब अठे आकर दे गये, कौसल

रही फेर सम्बत १९४३ का साल में बियाव दो जालम सिंहजी करया। बियाव एक तो किशनगढ सरकार की बाई सूं महा में हुवो। बरात इठे सूं गई, रुपया तीन लाख आसरे खरच हुवा। दूसरो बियाव गोईलीजी को डोलो काठियावाड सूं आकर बुंल्या वाल साहूकार की जगा में असाढ में हुवो। फेर सम्बत १९४४ का आसोज सुदी ८ कों पीछो इख्तियागत अजंटी को हुवो। सो फेर श्री जालमसिंहजी कूं दूसरी दफे का इखतीयार सम्बत १९४९ का पोह का महीना में माल खजाना सिवाय कुल रियासत को हुवो जिसका गालवां सारी रियासत में आबरूदार लोगां ने किया। आगे भी कई बखत गालवां हुवा था बड़ा सरकार की बगत में तथा अव्वल इखत्यार हुवा जद भी। फेर सम्बत १९४९ का असाढ में कुल इखत्यार माहाराज राणा जालमसिंह जी कों हुवा। फेर सम्बत १९५१ का भादवा में जालम सिंहजी ने दीवाणजी दग्मानंदजी चौबे कूं सीहोर सूं बुलाया कुल रियासत का काम सुपरत किया। कौंसल तोडी सो दीवाणजी काम अजंटी का अहद सूं आज दिन सुधी कर रह्या है। सम्बत १९५२ का चैत में सिरकार गवर्नमेन्ट ने जालमसिंहजी कूं काशीजी भेज्या। पीछो

अजंटी को इखत्यार हुवो । फेर सम्वत १९५४ का मगसर सुदी १ कों हुकम सिरकार गवर्नमिन्टी को अठे सुणायो। कुँवर भुवानीसिंहजी कों रियासत पर कायम किया गया है । छत्रसालजी झाला का कुंवर के वास्ते । जब से सब बातां रईस पणे की कायम हुई । फेर सम्बत १९५५ का सती महा बुदी ११ वार सोमवार बडा साब आबूजी वाला आकर गादी को दस्तूर पहले गवर्नमेन्टी को हुकम सुणाकर कर गया और कुल रियासत को इखत्यार देकर गया । फेर अजंटी कों उठा दीनी । सम्बत १९५२ में एजेन्ट गारडन साब छा और सम्बत १९५५ में एजेन्ट केमबाल साब छा । श्री दरबार भुवानीसिंहजी चौमहलां का दोरा पर पधरया जद केमबाल साब साथ था पाछे बिलायत गया, पाछे निगरानी कोटा वाला एटेन्ट साब की रही, काम दिवाणजी परमानंदजी की सुपरत रह्यो श्री दरबार की रायसूं । चोमहले श्री दरबार पधारया जब कुल बकाया माफ करी पांच लाख के करीब की। और चोमहलां में रसोई तमाम परगना का जमीदारां कूं जिमाई और केसरियां पागां बँधाई । तमाम परगणा का लोगां की खातरी करी सो लोग बहुत खुश हुये । फेर जेठ के महीने में खिलचीपुर के सिरकार का सतकार आया।

जिसकी साथ रामनाथसिंहजी खिलचीपुर सिरकार का भाई तथा दीवाण आया पीछे सिरोपाव देकर सीख दीनी। फेर सम्बत १९५६ में पाणी बरस्यो नहीं काल पड्यो जब मारवाड़ वगेरा का मनख भूखां मरता घणा आया जिसका इन्जाम सिरकार सूं रोटी का करादीना कई महीना तक। जिस में कई मनख मोतसूं मरगया, कई जीता रह्या सो काल मिटणे पर पीछा चल्यागया काम रियासत कों दीवाण साबजी परमानंदजी करता था। श्री माहाराज कुमार सावण बुदी ३ सम्बत १९५७ का साल में पैदा हुवा। जिसकी पूरी खुशी हुई। नाच मजल्सि रालवां वगेरे हुवा सरोपाव सब रियासत में सोनेका कडा वगेरे सुधां बख्शा जेवर भी कैई मनखा ने बख्स्यो रोशनी वगेरा कोठी ऊपर कई दिन तक हुई। श्री माहाराज कुमार को नाम श्री राजेन्द्रसिंहजी राख्यो सम्बत १९५९ पोस बुदी ४ कों बादशाह सप्तम एडवर्ड की तख्त नशीनी का दरबार लाठ साब करजन साब ने कियो उठे पधारया और लाठ साब से दिल्ली दरबार में मुलाखात की। इसकी खुशी को तुखमो १ चांदी को माहाराजा बलभद्रसिंहजी कों मिल्यो एजेन्ट साब की मारफत। और असाढ बदी ९ कों तुकमा तीन

मारफत एजेन्ट साब की कोटा सूं अठे आया खुद एजेन्ट साब लाया । जिनोंने एजेन्टी बंगले पर दरबार करके दिये, नग तीन जिसमें श्री दरबार को सोना को तकमूं एक, तकमा दो चांदी का जिसमें नग एकतो राज श्रीं छत्रसाल जी और एक दीवाणजी साब परमानंदजी के । श्री दरबार भुवानीसिंहजी माहाराज सेल तरीके पधारया । चोमेलां में तो साल दरसाल एक बार मियाला में । कशमीर सम्बत ५७ में ऊनाला में महीना तीन रह्या चोथा महीना में वापस पधाग्या । सम्बत ५८ में मन्मूरी का पाहाड़ां में पधारया । सम्बत ५८ में दिल्ली का दरबार में । सम्बत १९६० बैसाख बुदी ११ को बिलायत की सैर करबा पधार्या । पीछा इठे काती सुदी बारस सम्बत १९६१ में महीना साढा सात में पधारया । अधिक जेठ सुदा । शहर में बडो जलसो सब जगा हुवो । श्री दरबार को दोरो अहमदाबाद को हुवो । और अजमेर मेओकालिज में पढे छा जब सूं और फेर कई बार अजमेर को दोरो हुवो, सम्बत १९६२ की साल श्री माहाराज कुमार कों मेओकालिज में भरती कराबा पढाणे के वासते लेकर पधारया । सन् १९०९ ताः ९ फरवरी श्री दरबार भुवानी सिंहजी कों के. सी. एस. आई. को खिताब गवरामिन्टी

सूं मिल्यो जीं को तार आयो। फेर छे महीना पाछे लाठ साब मिन्टो साब ने कलकत्ते बुला कर के. सी. एस. आई. को तकमो बगस्यो उस साल और और जगह का राजा भी उठे तमगा लेबा आया छा। पाछे श्री दरबार सम्बत १९६५ में तुकमो लेकर कलकत्ता सूं वापस छावणी दाखिल होया। बजार कचेरयां सजाई गई, रात में रोशनी हुई। इसकी खुशी को दरबार हुवो सो श्री दरबार ने दरीखाना में बिराज मामा गोरधनसिंहजी खींची खिलचीपुर वाला को पैर में कड़ो सोना को बगस्यो और गांव एक मोजे कालाकोट तहसील पाटन को बगस्यो।

ठाकुर उमरावसिंहजी ए. डी. सी. चौहाण कों पग में सोना को कड़ो और गांव मोजे शामपुरो तहसील पाटन को बगस्यो और ताजीम बगसी और उमरावां की बैठक में बैठक बगसी।

बहोरा गोबिंदलालजी नागर कों कड़ो एक सोना को पग में बगस्यो और ताजीम बगसी और बैठक उमरावां की में बगसी, यांके जागीर को गांव मोजे मोतीपुरो तहसील पाटण की में श्री दरबार यांकी बाई को बियाव हुवो जद यांके यहां पधारया जब बगस्यो छो।

पग में कड़ो भाया रामचंद्रजी का बेटा धाबाई

शोबखसजी का पोता भाया शादीलालजी कों बगस्यो ।

माहाराजा बलभद्रसिंहजी, मीर बुनयादअलीजी वगेर की तरक्की तनखा की फरमाई । श्री दरबार के क्रिकट खेलणे को सोक सम्बत १९६५ का मगसिर बुद सूं लगा ॥

श्रीजालमसिंहजी बडा, और श्रीमाधोसिंहजी, श्रीमदनसिंहजी और श्रीप्रथीसिंहजी की दिन चार्या लिख्यते

मम्बत १७९७ में जालमसिंहजी जनम्या देवलोक सम्बत १९८० असाढ वुदी ४ ने रामचंद्रपुरा की छावणी में हुवा उमर वर्ष ८३ की पाई।

मम्बत १८३६ में श्रीमाधोसिंहजी जनम्या सम्बत १८९० का फागुण वुदी ३ हैं नानता में देवलोक हुवा। उमर बर्ष ५४ की पाई।

सम्बत १९६४ श्रावण वुदी १ श्रीमदनसिंहजी कोटा में जनम्या और देबलोक सम्बत १९०३ का असाढ वुदी ८ छावणी में हुवा। सती एक भटयाणीजी लार हुवा। उमर वर्ष ३९ की पाई।

सबम्त १८८७ का श्रावण सुदी ७ श्रीप्रथीराजजी कोटा में जनम्या देवलोक सम्बत १९३२ का भादवा

वुदी १२ कों हुवा । उमर वर्ष ४६ की पाई । छावणी में देवलोक हुवा ॥

तथा माहाराज श्री जालमसिंहजी प्रभातां दो घडी के तडके सुता उटता, पाछे मैलां पधारता पाछे हाथ धोता । मुजराई अफसर फोज का मुसद्दी हाजिर होता, बैठणे वाला बैठता और उभा रहबा वाला उभा रहता । मुल्कां की खबरां हलकारां की अरजीयां सुणता । हुक्म फरमाता सो उसी बखत अरजी खबर पै चढ जाता । पाछे सपाडो कर चरनामत गंगाजल आरोगता । पाछे पहर दो बाज्यां दरीखानो करता, जी में मुसद्दी, बडा २ आदमी, लालाजी, पंडित सखारामजी, बापू महीपतराव जी, खांजी दलेलखांजी, बहोरा कोटेश्वरजी, सेठ साहूकारां का साथ का बीस पचीस आदमी बापू हरीगोपालदासजी, संतोखचंदजी, रखबदासजी वगेरे अहलकार काम वाला हाजर होता सो खबरां अरज्यां का जुवाब मंडता सो सुणता । मुल्क परगणे का झारा सुणता सो आंगल्या का पेरवा पर ज्ञान लगा समझ लेता । आपका समझ में बैठ जाती जबतो आधो झारो सुण्या सूं मेकूब कर देता । आपका समझ ख्याल में न जमती तो फेर दूसरी बार बचाता तकरीर निकालता । झारो जमा खरच सूं पली

कहवे छा अब जमा खरच कहवे छै। पाछे दो पहर बजे दरीखानो बरखास होतो । एकंत जी सूं बतलाबा की होती जी सूं बतलाता। पाछे दुपहर पर दो बजे शिकार को बहानो कर असवारी करता, पालकी में बिराज ने बारे पधारता जी में मुल्कां की गरीब गुरबां की सुणवाई करता। पाछे तीसरे पेर पै एक घड़ी बाज्यां मासो एक भांग, रत्ती एक अफीम आरोगता। मैलां पधारता जद हुक्को पीता, पाछे सपाड़ो करता। एक बखत छे घड़ी दिन पाछला सूं कांमा पै बिराजता सो कांमो अरोगता जेते साहूकार लोग हाजर रहता। मुल्कां की बातां होती रहती। साहूकार लोगां हैं रसोई में रोटी जीमणे की परवानगी छी। सो जनम रसोई में त्यार होती जींकी अच्छी बुरी की पूछता रहता। पाछे दो घड़ी दिन पाछला सूं न्याव पै बिराजता, पटेल परगणा का हाजर खडा रहता पाछे न्याव करता। पाछे दरीखानो असराव, सिरदार भाई बेटां को होतो। पाछे रात ने चार घड़ी रात गयां खणे में पोढता जठे संतोखचंदजी हाजर रहता बात करता। आंख लाग जाती पाछे उठ कर बिना हीं सीख घर पर चल्या आता। पाछे रखबदासजी सगतपुर वाला खडगा के तालो मार कूंची अपणे पास रखता। पहरा पै साथ का

पासवान ढोलणी के पास बैठता। बारे अर्दली का जवाना को पहरो लागतो ॥

राज श्री माधोसिंहजी आधी रात का अमल आरोग सैलां पधारता। पाछे फेर पोढ जाता जींका चार घड़ी के तड़के जागता सो सैलां पधारता जीमें तीन घड़ी लागती ऊंमें केई काम का बंदोबस्त का इकंत रहबा में बिचार बांधता। पाछे हाथ मूंडा धो दातण करता जब चाकर लोग सेठ साहूकार चार घड़ी के तड़के हाजर होता। पाछे सपाड़ो करता जब खुमखेली वाला नानजी बारेट वगेरे हाजर होता सो खुमी की मिजाज मुजब बातां होती। पाछे नितनेम पर बिराजता सो ब्राह्मण, पंडित जोतसी हाजर होता। नितदान होतो। पाछे कांसा पै पहर पै एक बज्यां बिराजता सो कांसो आरोगता तीमें घड़ी दो लागती। साथका अमरावां बालक पांतियां पै बैठ जीमता। पाछे पहर चार बाज्यां दरीखाने बिराजता सो खबरां अरजियां मुल्कां की सुणता। झारा परगणा का सुणता। मुसद्दी कार गुजार लोग दरीखाना में बैठ्या रहता। पाछे दो पहर में एक घंटा एकान्त करबा वालां सूं मरजी होती जी सूं काम होतो ऊंसूं करता। किसी दिन सेठ बहादरमलजी से बी दूजे तीजे रोज

इकंत करता । पाछे दो पेरी का सैलां पधारता, पाछे अमल आरोगता । आठवें दिन रँग करता, पाछे रावला में जुवारजी खुवास के पास पधारता उठे पोढता पाछे छै घड़ी दिन पाछला का सपाड़ो कर किसी दिन असवारी सैल के वासते पधारती । बाकी हमेंशा दो घड़ी दिन से दरीखानो अमरावा, भाई बेटां, ताजीमी सिरदारां को भर जातो । पाछे बलदाऊजी की हथणी पै बिराज मुल्क को नमाव करता । पटेल नानगो पालकीखाना को हाजर खडो रहतो । पाछे सांझ का कांमा पै बिराजता सो कांमो आरोगता । पाछै छै घड़ी रात गयां पै रावला में पोढ जाता ॥

श्री दरबार माहाराज राणाजी श्री मदनसिंहजी परभात गजर बज्यां जागता, सैलां पधारता, पाछे हाथ धोता, दातण करता जी में घड़ी दोय लागती, मुजराई चाकर अफसर, मुसद्दी, साहूकार लोग हाजिर होता सो बैठणे वाला बैठता खडा रहवा वाला खडा रहता । मुल्कां की खबरयां, अरजियां मुनशी निहालजी बाचता उसी बखत हुकम अरजी पै चढतो जातो कबूतर लंकियां हैं चुगो पड़तो । पाछे अफीम आरोगता छाने, पाछे सपाड़ो होतो जब खुस खेल का चौबे बंसीजी, चौबे नरसी और बैद

सोमेसर, बाबा सेवादासजी, चरनदासजी वगेरा साथ का सरदार पासवान हाजर रहता, खुशी की बातां होती रेती, पाछे ननेम में बिराजता, पहर दिन चढ्यां पाछे दान होतो, पंडित जोतसी ब्राह्मण हाजर रहता, भागोत को पाठ होतो काती के महीने काती पिछली रात न्हाता। पाछे पहर पर दो बज्यां का कांसा पर बिराजता सो सेठ साहूकार मुसद्दी बैठा होता सो देसावरां की बातां करता रहता, असराव साथ का रजपूत भाई बेटां को पांतियो लागतो सो गोठ़ जीमता। पाछे रसाल् रत की आसा वगेरे अमोलकचंदजी का हात सूं बटता। पाछे पहर पै दो तीन बज्यां पाछे दरीखाने बिराजता सो खबरां की अरज्यां का जवाब हुकम सूं मँडता। पाछे मुल्क का झाडा जमा बंदी का सुणता। पाछे एकांत काम करने वाला कनीरामजी लालाजी वगेरा सूं करता। पाछे दो पहर बाज्यां जनाना में खवास्यां के पास जाकर आराम करता, पाछे तीसरा पहर पै दो तीन बाज्यां जागता सो सैलां पधारता, हाथ मूडा धोता, अफीम आरोगता। सपाड़ो करता, किसी रोज असवारी सैल की होती, तथा तीन घड़ी दिन पाछला सूं दरीखाने बिराजता सो ताजीमी सिरदार असराव भाई बैटा सब हाजर होता, पाछे तबेला में न्याव पै कुरसी लगार बिराजता।

पटेल हाजिर रहता, माहाराज कुमार घोडा फरबो करता, पाछे न्याव करके जानाना में शामकूं रोशनी की बखत पधारता सो माजी साहब के गोढे पधार मुजरो करता, पाछे कांसा की त्यारी होती सो कांसा पै बिराजता, सो दो घड़ी रात गयां पै जीम उठता। पाछे महल में ढोलणी पै बिराजता, साथ का पासवान हाजर रहता, पाछे चार घड़ी रात गयां जनाना की बंदोबस्ती होती और आप जनाना में हीं पोढता॥

श्री माहाराज राणाजी श्री प्रथीसिंहजी तड़के फजर उड़दी की बखत जागता सो सैलां पधारता। पाछे हात मूंडा धोता, दातण करता पास वाला खुशखेली का लोग साथका हाजर होता कारीगर हुनरबंद हाजर रहता पाछे केई काम अपणे हात मे सीखता करता देखता। पाछे पहर बज्यां सपाडो होतो, पाछे नितनेम दान होतो पंडित ज्योतसी ब्रामण हाजर होता, पाछे पहर पै चार बज्यां खांसो आरोगता, जीं पहली कार कस्बा वाला मुन्शी दोनो जणा एकान्त में काम की अर्ज करता खरब हुकम मुनशी सुणाबो करता, पाछे कांसा पै बिराजता सो साहूकार, मुसद्दी, पासवान हाजर रहता, पाछे दो पहर का चोपड गंजफो सतरँज आपकी महरबानगी का लोग

हाजर रहता सो खेलता। पाछे मुरगां की लडाई होती रहती, पाछे अफीम तीन दफे दिन में आरोगता, पाठ भागोत गीता को करता, पिछले छै घड़ी दिन से फेर मपाड़ो होतो, मैल पै पधारता, किसी रोज असवारी करता, सांझ को। कितनाई बरस कुसती को मावरो राख्यो, कितनेई बरस आधी रात कों कांसो आरोग्यो। सब कायदा मावरो पलटता रह्या, कायमी राखी नहीं। मुलक की सुणाई पै निगाह कम रही, जिसके सुपरत कार कर्यो उस पै उसकी जबानी पै अमल राख्यो। चाकर लोगां हैं और बिना चाकरी का हैं खाणे कों कर दियो सो घर बैठ्या खाते रहो। सो चाकर लोग बडे २ मुसद्दी अमराव और पासवानों के सरे पीछे झोलियां लड़का लुवा दिया खाण पीण रोजगार जागीर बाल राखी। उसका नाम बणा राख्या, अपणे दिल से किसी का नुखसाण न चाह्यो, जो कि काम वालाने दो रुपया खाया तोभी आपने समझ लिया, लेकिन उसकी तकीगात सुणवाई न करी। पाछे सांझ को कांसो आरोग चार घड़ी रात गयां रावला में जनाना की बंदोबस्ती होती। भगतण्यां कलावतां का गाणा सुणने का बहुत शोक था, कांसो आरोग बारे पधारता जब मुजरायां हैं खडां खडां सलाम

होती, पाछे सरकार पोढ जाता, पाछे दो पेर बाज्यां अमल आरोग मुरगां की सैल देखता ॥

झालावाड़ की बंसावली

श्री नाथजी माहाराज सम्बत १५३५ बैसाख बुदी ११ ब्रज गिरराज में प्रकट हुवा। श्रीजीद्वार पधारया। मेवाड़ में सम्बत १७२६ आसोज सुदी पूनम गिरराज सूं पधारया। मास २८ गैला में बिराज्या, रस्ता में धोलपुर के पाम डंडोत धार बिराज्या एक चातुर मास। दूसरो चातुर मास कोटे कृष्ण बिलास पदम सिलापे। तीसरो चातुर मास जोधपुर परगणे, चापासणी में बिराज्या ॥

माधोसिंहजी बडा गुजरात में मुछाला बाग्या ज्याकी पीढयां मँडी ॥

माधोसिंहजी के बेटा सात, १ मदनसिंहजी, २ अगर सिंहजी, ३ हिम्मतसिंहजी, ४ अरजुनसिंहजी, ५ अभै सिंहजी, ६ मूणसिंहजी, ७ जेतसिंहजी ॥

मदनसिंहजी का बैटा प्रथीराजजी, प्रथीराजजी का बैटा तीन, १ शिवसिंहजी, २ जालमसिंहजी, ३ नगजी ॥

जालमसिंहजी का बैटा माधोसिंहजी, माधोसिंहजी का बैटा मदनसिंहजी, मदनसिंहजी का बैटा प्रथीसिंहजी,

प्रथींसिंहजी के झोल्यां जालमसिंहजी गुजरात सूं आया ॥

अगरमिंहजी की पुस्तां का बडा माधोसिंहजी छा, माधोमिंहजी का अगरसिंहजी, अगरमिंहजी का सोभाग सिंहजी और संकरसिंहजी, मंकरमिंहजी का बनेसिंहजी, बनेमिंहजी का अगरमिंहजी, अगरसिंहजी के पाछे हिम्मत सिंहजी झोल्यां लीना मम्बत १९०१ में सादड़ी का। सादड़ी का बिनैमिंहजी मँगाया। अगरमिंहजी के ऊपर छतरी बणी गादीखाना के बारणे। हिम्मतसिंहजी का छत्रमालजी, छत्रमालजी का भवानीमिंहजी जो आज काल झालावाड का तख्त पर बिराज्या श्री माहाराज कुंवार गजेन्द्रमिंहजी मेओकालिज अजमेर में बिद्याध्ययन करबा पधार्‌या ॥

अगरमिंहजी का भारतमिंहजी, भारतसिंहजी का सूरजमलजी, सूरजमलजी का गोबिंदमिंहजी, गोबिंदसिंह जी का गोपालमिंहजी, गोपालमिंहजी के दो बेटा, अरजुनमिंहजी और चत्रभुजमिंहजी मो अरजुनसिंहजी के झोल्यां लिया जो मोजूद छे ॥

माधोमिंहजी का बेटा अरजुनमिंहजी की पुस्तां बड वाण में राज करे। माधोसिंहजी का अरजुनसिंहजी, अरजुनमिंहजी का सबलमिंहजी, मबलमिंहजी का

चांदासिंहजी, चांदासिंहजी का प्रथीराजजी, प्रथीराजजी का जालमसिंहजी, जालमसिंहजी का राजासिंहजी, राजासिंहजी का चंदरसिंहजी, चंदरसिंहजी का दाजीराज माधोसिंहजी, बैटा अभैसिंहजी को बिसतार चूड़ा में राज करे । अभैसिंहजी का राईसिंहजी, राईसिंहजी का अमेदासिंहजी, अमेदासिंहजी का गजासिंहजी, गजसिंह जी का हटीसिंहजी, हटीसिंहजी का अभयासिंहजी, अभय सिंहजी का रायासिंहजी, रायासिंहजी का बेचरसिंहजी ॥

माधोसिंहजी का मूणासिंहजी को बिस्तार गांव धांगदडा गुजरात । मूणसिंहजी का बिनयासिंहजी, ज्यांका मालजी, ज्याका देवसिंहजी, ज्याका भवानीसिंहजी, ज्याका अभयासिंहजी ॥

माधोसिंहजी का सातवां कँवर जैतसिंहजी को बंस चाल्यो नहीं ॥

औवरी सम्बत १८३१ में खडी हुई आगे कसनभंडार को काम छो। गढ में बरस तीन जालमसिंहजी तबारे में कोटा का गढ में काम कर्‌यो। पाछे पायगां बणी सम्बत ३७ में पाछे गढ में ह्वेली छी तीमें रहै छा औवरी ऊपर दोलतराम कूकड़ा छो मूडे आगे बहोरा कोटेश्वरजी छा सो जालमसिंहजी ने औवरी पर मेल्या। पाछे दोलत राम तो कैद कर्‌यो ईं को बैटो बछराज ने काम सूंप्यो नहीं गेबी पासवान की सुपरत काम कर्‌यो, पाछे गेबी ने लुगाई बेटी मारी तीं पाछे लाला पासवान के सुपरत औवरी होई, सम्बत ६० में। बहोरा कामेश्वरजी की सुपरत जनानी ड्योढी को काम रह्यो। छगनजी सम्बत ७८ में मथुरा गया, सम्बत १८९९ फागण में माहाराज राणाजी श्री मदनसिंहजी की आगरे में लाठ साब से मुलाखात हुई तुकमूं बगस्यो, बीबियां को नाच दिखलायो बहुत खुश रहै॥

सम्बत १९१९ में माहाराज राणाजी श्री प्रथीसिंहजी से लाठ साब के आगरे में मुलाखात हुई, तुखमो बगस्यो। सम्बत १९२३ फेर माहाराज राणा श्री प्रथीसिंहजी के आगरे लाठ साब से मुलाखात हुई निशान बगस्यो॥

सम्बत १९३४ का साल में माहाराज राणा श्री जालम

सिंहजी दिल्ली में लाठ साहब सूं मुलाखात करी आम दरबार हुवो केई रईस भेला हुवा । तुकमो निशाण को बगस्यो ॥

अगेरजी सम्बत १७९८ की साल में मगसूदाबाद जगत सेठ लायो इम मुल्क में । अंगरजां को एद सम्बत १८४० का साल मूं फेल्यो । नखलेउ सम्बत १९१३ के साल वाजिदअली शाह बादशाह अवध कों पकड कर कलकत्ते ले गया ॥

भावसिंहजीरा पिता के बडवाण में राणी मर गया जब दूसरो बियाव कीन्हों जब दमकत कराया छोटी राणी के बैटो होवे सो गादी पावे । जब वां के बैटो मास १२ में हुवो, जब भावसिंहजी ने दमकत कर दीना छा जब तो परनाया जब भावसिंहजी तीरथां की सीख कर मेवाड़ में आया सावर सगतावतां के । पाछे पीपल्या का ठाकर मरग्या वा कों भुवाजी परनाया छा सो बेठबा आया । राणाजी के बूंदी वाला सूं झगडो कांकड़ उपर छो सो फोज भेली कर उमरावां ने बुलाया, जब पीपल्या का कुंवर छोटा छा सो या सूं भुवाजी ने कही भाईजी थां जावो जब यां की लार सात बैटा छा आदमी ६०० को खटलो छो जब शिवसिंहजी राणाजी की लार गया बूंदी

वाला पै तीर चलायो सो खवासी मे बैठ्या छा ज्याके तीर की लागी सो मर गया। ये तीर आछ्यो बावे छा। जब राव राजाजी बूंदी का पाछा हट्या राणाजी की जीत हुई जब कांकड पर डेरा शिवसिंहजी का रह्या। जब राव राजाजी ने सदेशो भेज्यो सो सोसिंहजी झाला सूं कहो कि थां मांके पास आवो था अठे बूंदी का घर में रहो, जब उदयपुर सूं बूंदी आया, बूंदी में पट्टो रुपया ४००००) को पाया॥

अव्वल मुलाखात अजमेर में पधारया नानते सूं माधोसिंहजी तथा माहारावजी की लार सम्वत १८८८। पीछे सम्वत १८९४ मे रियासत फटी जद साहीमुरातब बडा साब आबू अजमे रवाला आकर दीनो। फेर सम्बत १८९९ मे आगरे मुलाखात लाट साब सूं मदनसिंघजी करी, पीछे शहाबाद होकर पधारे। फेर माहाराज राणा श्री प्रथीसिंहजी मुलाखात करी, पेली सम्बत १९१९ में आगरे मे तुखसो बगस्यो. सहा अमोलकचंदजी लार गया॥

फेर सम्बत १९२२ की साल में आगरे मुलाखात हुई तुखमो बगस्यो, फेर श्री दरबार जगन्नाथजी की जात्रा करबा पधारया सो साम बारा तक पूरब में रह्या। पीछा

अठे पधारता भी लशकर गवालियर माहाराज जीवाजी सिंधिया सूं मुलाखात करी । फेर सम्बत १९२७ में अजमेर पधारया, मुलाखात करी लाठ साब सूं जठे जोधपुर वाला के बैठक पै ऊंची आई ती पै रुसाय चल्या गया, फेर श्री दरबार की मुलाखात श्री उदयपुर का राणाजी सूं नसीराबाद की छावणी में करी ॥

फेर सम्बत २९ में श्रीनाथद्वारे पधारया जनाना सुधां जद उदयपुर राणाजी सूं मुलाखात करी । फेर श्री जालम सिंहजी ने सम्बत ३४ में श्री दिल्ली का दरबार में मुलाखात लाठ साब सूं करी तुकमूं निशाण को बखशो । काम रियासत को अजंट एबट साब ने कियो ॥

श्री नवनीतप्रियाजी नानता में भाई हिम्मतसिंहजी भायां में छा ज्याके एक महाजन बैश्नव छो जी के पास छा सो ऊंसूं सेवा नहीं बणी जद याने दीना । पाछे कोटा का गढ में बिराजमान करया बही भोग ब्रजनाथजी की देखां देखी बँध्यो । माहाराज राणा श्री मदनसिंहजी बडा की बखत १७६१ की साल में । श्री माहाराज राणाजी श्री मदनसिंहजी कोटा सूं राज फटार पधारया जद श्री नवनीतप्रियाजी बी साथ पधारया जो पाटण

मंदिर श्री दुवारकानाथजी का मंदिर पास मंदिर बणार
बिराजमान करया ॥

॥ इति ॥

प्रार्थना

नृपति भवानीसिंह जू, श्री राजेन्द्र कुमार ।
रहो कुशल जोलों अछित, भुव धरती शिशु मार ॥
हमरे पिता समान नृप, अरु माहारानी मात ।
श्री राजेन्द्र कुमार युत, रहो कुशल दिन रात ॥
जोलों शशि रबि गंग नभ, भूमि भार शिर शेश ।
झालाकुल "नवनीत प्रिय", राखे अटल हमेश ॥
यही प्रार्थना रैन दिन, ईश्वर सों कर जोड़ ।
राजकरें निश दिन अटल, झालाकुल शिर मोड़ ॥
गयो फैलि चारूं दिशिन, गवर "जस" जग मांहिं ।
दिन २ बढहिं प्रताप तुव, या में संशय नाहिं ॥

